पैगंबर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की वसीयतें

डॉ. मुह़म्मद बक्र इस्माईल

दुसरा भाग

91-120

Rasoulallah.net

LiseOnSunnah Rasoulallah RasoulAllahnet RasusoulAllah_net

अल्लाह से दुआ़ मांगो और इस यक़ीन के साथ मांगो कि तुम्हारी दुआ़ जरूर कबूल होगी।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - أَنَّ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "ادْعُوا اللَّهَ وَأَنْتُمْ مُوقِنُونَ بِالْإِجَابَةِ، وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ لَا يَسْتَجِيبُ دُعَاءً مِنْ قَلْبٍ غَافِلٍ لَاهٍ

तर्जुमा: हज़रत अबू हुरैरा रद़यिल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "अल्लाह से दुआ़ मांगो और इस यक़ीन के साथ मांगो कि तुम्हारी दुआ़ जरूर कबूल होगी। और (अच्छी तरह) जान लो कि अल्लाह बेपरवाही से मांगी हुई गफलत में पड़े दिल की दुआ़ कुबूल नहीं करता है।"

अल्लाह से दुआ़ मांगो और इस यक़ीन के साथ मांगो कि तुम्हारी दुआ जरूर कबूल होगी।

अल्लाह तआ़ाला पर भरोसा रखना एहसान की सबसे बेहतर सूरत है। जो अल्लाह पर पूरा यकीन रखता है वह अपना तन मन सब कुछ अल्लाह को सौप देता है, उस पर अच्छी तरह भरोसा करता है, उसकी कृपा से कभी मायूस नहीं होता और रात और दिन उसके दरबार में दुआ़ करता रहता है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम सबसे पहले मुसलमान हैं। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम सबसे ज़्यादा अल्लाह की पर भरोसा रखते थे और सबसे ज़्यादा उसके दरबार में गड़िगड़ि कर दुआ़ करते थे। तथा आप सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम अपने सह़ाबा रद़ियिल्लाहु अ़न्हुम को यह सिखाते थे की किस तरह से अल्लाह की बारगाह में दुआ़ करनी चाहिए यानी उन्हें बताते थे की अल्लाह की बारगाह में दुआ़ करते समय दिल हाज़िर होना चाहिए, उसकी कृपा पर पूरा भरोसा पूरा भरोसा रखना चाहिए। और दुआ़ के कुबूल होने का पूरा यकीन होना चाहिए। इसी वजह से आप सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम ने अपने सह़ाबा से इरशाद फ़रमाया:

अल्लाह से दुआ मांगो और इस यक़ीन के साथ मांगो कि तुम्हारी दुआ जरूर कबूल होगी।

"अल्लाह से दुआ मांगो और इस यकीन के साथ मांगो कि तुम्हारी दुआ जरूर कबूल होगी।" यानी इस यक़ीन के साथ दुआ मांगो की एक लम्हे के लिए भी तुम्हें उसके कुबूल होने में शक नहीं होना चाहिए जबकि आप गिड़गिड़ा कर दुआ करें, आपका दिल ईमान को गंदा करने वाली हर चीज से पाक हो, जायज़ खाते पीते और पहनते हों। तथा अपनी ताकत के मुताबिक अपने अल्लाह की आज्ञा का पालन करते हों और दुआ से पहले खूब अच्छी तरह अल्लाह की तारीफ की हो। यह सब अल्लाह पर भरोसा रखने से संबंधित चीज़ें हैं।

"अल्लाह की पनाह (शरण) मांगा करो आज़माइश (आफत) की दुश्वारी से

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنْ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ تَعَوَّذُوا بِاللَّهِ مِنْ جَهْدِ الْبَلَاءِ وَدَرَكِ الشَّقَاءِ وَسُوءِ الْقَضَاءِ وَشَمَاتَةِ الْأَعْدَاءِ

तर्जुमा: ह़ज़रत अबू हुरैरा कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "अल्लाह की पनाह (शरण) मांगा करो आज़माइश (आफत) की दुश्वारी, बदबखती की पस्ती, बुरे अंत और दुश्मन के (अपने ऊपर) हंसने से।"

"अल्लाह की पनाह (शरण) मांगा करो आज़माइश (आफत) की दुश्वारी से

"आज़माइश (आफत) की दुश्वारी से " यानी उसकी सख्ती और कठोरता, उसे बर्दाश्त करने की ताकत और उससे बच नकिलने और छुटकारा पाने के तरीकों की कमी, उसका सामना करने से तंग दलिी, उसमें जो इनाम हैं और उसके बर्दाश्त करने के बाद जो स़वाब है उसे ना समझने से। क्योंक‍ि आज़माइश इम्तहि‍ान है और इम्तहि‍ान अच्छाई और भलाई दोनों से होता है।

इंसान जब "बदबखती (दुर्भाग्य) की पस्ती "से पनाह मांगे तो उसे उन तमाम गुनाहों का भुगतान करने की हमेशा कोशशि करनी चाहिए जो उस बदबखती (दुर्भाग्य) का कारण हैं।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैह‍ि विसल्लम अपने सह़ाबा ए करिाम रद़यिल्लाहु अ़न्हुम को दुआ़ का तरीक़ा और दुआओं के ऐसे शब्द सखािते थे जनिके द्वारा वह दुआएं करें ताक‍ि उन्हें अपनी जरूरतों को पूरा करने का ज़रयिा बना सकें। क्योंक‍ि केवल दुआ़ ही मक़सदों को पूरा करने के लिए काफी नहीं है बल्क‍ि हमारे ऊपर वह काम करना भी जरूरी है जसिकी हमें उन्हें पराप्त करने के लिए जम्मिेदारी दी गई है।

"अल्लाह की पनाह (शरण) मांगा करो आज़माइश (आफत) की दुश्वारी से

उदाहरण के तौर पर जो रोज़ी-रोटी हासलि करना चाहे तो वह उसके हासलि करने के लिए कोशशि करे, भाग-दौड़ करे, और इस मामले में अल्लाह पर भरोसा रखते हुए उसकी तलाश में मेहनत करे।

बगैर कोशशि के केवल दुआ करना तो सुस्ती है अल्लाह पर तवक्कुल (भरोसा) नहीं है। क्योंक िअल्लाह पर तवक्कुल (भरोसा) तो जैसा के उलामा इरशाद फरमाते हैं वह यह है क िसाधनों (कारणों या ज़रियों) को अपनाते हुए अल्लाह पर भरोसा करे।

अथा: बंदे को पूरी तरह से केवल दुआ ही पर भरोसा नहीं कर लेना चाहिए। बल्क िउसे इबादत और अल्लाह से नज़दीक होने का एक जरयि समझे। और अपने अल्लाह की बारगाह में अपनी पूरी मोहताजी बयान करे और अल्लाह तआला की मदद के बगैर अपनी जरूरतों को पूरा न कर पाने की कमजोरी को जाहरि करे।

वह शैतान है जिसका का नाम खनज़ब है, जब तुम्हें उस शैतान का असर महसूस हो तो उससे अल्लाह की पनाह मांगो

عَنْ أَبِي الْعَلَاءِ، أَنَّ عُثْمَانَ بْنَ أَبِي الْعَاصِ أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّ الشَّيْطَانَ قَدْ حَالَ بَيْنِي وَبَيْنَ صَلَاتِي وَقِرَاءَتِي يَلْبِسُهَا عَلَيَّ، فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ذَاكَ شَيْطَانٌ يُقَالُ لَهُ خَنْزَبٌ فَإِذَا أَحْسَسْتَهُ فَتَعَوَّذْ بِاللَّهِ مِنْهُ، وَاتْفِلْ عَلَى يَسَارِكَ ثَلَاثًا". قَالَ فَفَعَلْتُ ذَلِكَ فَأَذْهَبَهُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ عَنِّي

तर्जुमा: हज़रत अबुल ऊला से रिवायत है कि हज़रत उस्मान बनि अबु अल-आस रदियल्लाहु अन्हु नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम के पास आए और कहा कि ए अल्लाह के रसूल! शैतान मेरी नमाज़ में रुकावट बनता है और मुझे क़ुरआन भुला देता है।

वह शैतान है जिसका का नाम खनज़ब है, जब तुम्हें उस शैतान का असर महसूस हो तो उससे अल्लाह की पनाह मांगो

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "वह शैतान है जिसका का नाम खनज़ब है, जब तुम्हें उस शैतान का असर महसूस हो तो उससे अल्लाह की पनाह मांगो और (नमाज़ के अंदर ही) बाएं तरफ (दिल पर) तीन बार फूंक मारले।" हज़रत उस्मान रद्वियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मैंने ऐसा ही किया तो अल्लाह ने मुझ से उस शैतान को दूर कर दिया।

सहाबा ए करिम रद्वियल्लाहु अन्हुम शैतान की सारी साजिशों को पूरे तौर पर जानते थे, उनसे बचने के लिए पूरी सावधानी बरतते थे और हर समय उनसे अल्लाह की पनाह मांगते थे जैसा कि अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसका हुक्म दिया है। लेकिन फिर भी कुछ सहाबा ए करिम नमाज़ वगैरह इबादतों में कभी-कभी शैतानी वसवसे महसूस करते थे और उन्हें दूर नहीं कर पाते थे।

वे सबसे बड़े हकीम नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में आते ताकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन्हें इस बीमारी की दवा बताएं कि कहीं उसका खतरा बढ़ ना जाए कि फिर वे ज़िक्र करना, तसबीह, कुरआन मजीद और रात में नमाज़ पढ़ना वगैरह दूसरी इबादतों मैं अपने समयों से फायदा ना उठा सकें।

वह शैतान है जिसका का नाम खनज़ब है, जब तुम्हें उस शैतान का असर महसूस हो तो उससे अल्लाह की पनाह मांगो

अथा: नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया: "जब तुम्हें उस शैतान का असर महसूस हो तो उससे अल्लाह की पनाह मांगो।" यानी जब शैतान तुम्हें किसी दुनिया की चीज का वसवसा दिलाए ताकि तुम्हें तुम्हारी नमाज़ और कुरान पढ़ने से रोके तो अल्लाह से मदद मांगो। क्योंकि वही तुम्हें उससे बचाएगा और महफूज रखेगा। इंसान उसी समय शैतान और उसकी बुराई से सुरक्षित रह सकता है जबकि वह उससे अल्लाह की पनाह (शरण) चाहे, उससे सुरक्षा मांगे और हर हाल और हर समय पूरे दिल से अल्लाह का ज़िक्र करे।

मोमिन के अलावा किसी को अपना दोस्त मत बनाओ

عَـنْ أَبِي سَـعِيد الخـدري - رَضِيَ اللَّـهُ عَنْـهُ - عَـنْ النَّبِـيِّ صَـلَّى اللـهُ عَلَيْـهِ وَسَـلَّمَ قَالَ" لَا تُصَاحِبْ إِلَّا مُؤْمِنًا وَلَا يَأْكُلْ طَعَامَكَ إِلَّا تَقِيٌّ

तर्जुमा: हज़रत अबू सईद खुदरी रद़यिल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं कनिबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "मोमनि के अलावा कसिी को अपना दोस्त मत बनाओ और तुम्हारा खाना केवल मुत्तक़ी (नेक और परहेज़गार) व्यक्ति ही खाए।"

मोमिन के अलावा किसी को अपना दोस्त मत बनाओ

नेक लोगों की दोस्ती और उनके साथ रहने में केवल भलाई ही है भले ही इस रास्ते में कभी-कभी कुछ लोगों को ऐसे मामलों का सामना करना पड़ता है जिन्हें वे पसंद नहीं करते हैं लेकिन समझदार लोग उनकी परवाह नहीं करते हैं बल्कि उन्हें नजरअंदाज कर देते हैं। क्योंकि वह जानते हैं कि नेक लोगों से बुराई कैसे नहीं आ सकती है और इस रास्ते में थोड़ी बहुत दुश्वारियाँ तो बर्दाश्त करनी ही पड़ेंगी।

और एक सच्चे मोमिन की यही शान है। क्योंकि वह पाकी और साफ-सुथराई का केंद्र है और उसके पास साफ सुथरा दिल है जो ईमान को गंदा करने वाली हर बुरी चीज़ से पाक है। तो भला वह किसी ऐसे व्यक्ति के कैसे नजदीक हो सकता है जो उसके बिल्कुल खिलाफ हो और भला वह किसी ऐसे आदमी से कैसे दोस्ती कर सकता है जो उसके बिल्कुल उल्टा हो। तो भला कैसे उन दोनों में इत्तेफाक और एकता कैसे मुमकिन हो सकती है हालांकि वे दोनों मिज़ाज़, आत्मा और अखलाक़ के एतबार से एक दूसरे से पूरे अलग-थलग हैं।

मोमिन के अलावा किसी को अपना दोस्त मत बनाओ

इसमें कोई शक नहीं है कि बर्तन में से वही चीज़ निकलती है जो उसमें होती है और हर व्यक्ति वही खर्च करता है जो उसके पास होता है। इसी वजह से नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम ने मोमिन को अपने जैसे मोमिन ही से दोस्ती करने का आदेश दिया और उसे बुरों का साथ इख्तियार करने से मना फ़रमाया ताकि उसे उन जैसी कोई बुराई ना लग जाए।

मोमिनो की आत्माओं को बदनों में डाले जाने से पहले ही जब से अल्लाह ने उन्हें पैदा किया है आत्माओं की दुनिया में ही एक दूसरे से लगाओ होता है और जब दुनिया में मिलती हैं तो एक दूसरे को पहचान लेती हैं और उनमें लगाओ और प्रेम हो जाता है।

हर व्यक्ति अपने दोस्त के धर्म पर होता है।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - أَنَّ النبيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ:
الرَّجُلُ عَلَى دِينِ خَلِيلِه، فَلْيَنْظُرْ أَحَدُكُمْ مَنْ يُخَالِلُ

तर्जुमा: ह़ज़रत अबू हुरैरा रद़ियल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "हर व्यक्ति अपने दोस्त के धर्म पर होता है। इसीलिए तुम में से हर व्यक्ति यह देख ले कि वह किससे दोस्ती कर रहा है।"

हर व्यक्ति अपने दोस्त के धर्म पर होता है।

यह वसयित बड़ी हकिमत और बेहतरीन नसीहत है। जैसा कि यह उन नियिमों में से एक अहम नियिम है जिन पर निजी या व्यक्तिगत और सामाजकि संबंध आधारित हैं। और जैसा कि आप देख रहे हैं कि इस ह़दीस़ शरीफ में शब्द बहुत कम हैं लेकिन वास्तव में यह बहुत से महत्वपूर्ण मानों को शामलि है जिन्हें हर साफ़ सुथरी बुद्धि महसूस करती और खुशी खुशी स्वीकार करती है और अच्छे व्यवहार और महान अखलाक़ बनाने में इन मानों के लाभ और इनकी तासीर में ज़र्रा बराबर भी शक नहीं है।

इस वसयित से वही व्यक्ति लाभ उठा सकता है जिसके पास ऐसी बुद्धि हो जो मामलों को हर तरह से परखने और उनके अंजाम को जानने की काबलियित रखती हो और उसके पास ऐसा पाक व साफ़ दलि हो जो अल्लाह के दयि हुए नूर (प्रकाश) से ऐसी चीज़ें देखता हो जो दुसरे लोग अपनी आंखों से न देख पाते हों।
नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम के फरमान: "अपने दोस्त के धर्म पर होता है।" का मतलब है कि उस पर उसकी हालत, उसके कहने और करने का असर होता है यहाँ तक कि वह भी उसी के रास्ते पर चलने लगता है कभी तो जानबूझकर और कभी अंजाने में। और कभी कभार तो वह अपने सारे कामों और अपनी सभी आदतों में हूबहू अपने उसी दोस्त की तरह हो जाता है जैसा कि शब्द "पर" इसकी तरफ इशारा कर रहा है।

हर व्यक्ति अपने दोस्त के धर्म पर होता है।

जब कोई व्यक्त‍ि एक लम्बे समय तक क‍िसी ऐसे व्यक्त‍ि के साथ रहता है ज‍िससे वह बुद्ध‍ि, ज्ञान और तजर्बे में कम हो तो वह उसके अखलाक़ से प्रभाव‍ित हो जाता है और उन दोनों में जो भी तेज़ या धनी होता है वह अपने साथी पर हावी हो जाता है।

हम यह भी कह सकते हैं क‍ि उन दोनों में से असर करने व्यक्त‍ि अपने साथी पर हावी हो जाता है और अपने असर से अपने साथी को अपना फ‍िदाई बना लेता है।

फ‍िर तो वह उसी के इशारे पर चलता है और जो ज‍िस चीज़ के करने को कहता है वह करता है और ज‍िससे मना करता है उसे नहीं करता है। और उसके साथ ऐसे ही रहता है जैसे नौकर अपने माल‍िक के साथ।

आमतौर यह देखा जाता है क‍ि बुरे साथी का असर नेक साथी पर ज़्यादा होता है। क्योंक‍ि शैतान हमेशा बुराई के साथी के साथ रहता है तथा बुरे इंसान में ऐसी आदतें होती हैं जो अपनी तरफ खींचती हैं।

ह़दीस़ शरीफ में आदमी के धर्म का माना है उसका व्यवहार, रास्ता, तौर-तरीका, अक़ीदा और आ़दत आद‍ि। कुछ लोगों के एक से ज़्यादा भी दोस्त हैं ज‍िनके वे हमेशा साथ रहते हैं, साथ ही में खाते पीते हैं यहाँ तक क‍ि दो ज‍िस्म एक जान होते हैं।

मैं दिल का हाल या किसी के अंत को नहीं जानता हूँ।

عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرَةَ عَنْ أَبِيهِ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا - قَالَ: أَثْنَى رَجُلٌ عَلَى رَجُلٍ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: "وَيْلَكَ، قَطَعْتَ عُنُقَ صَاحِبِكَ، قَطَعْتَ عُنُقَ صَاحِبِكَ مِرَارًا ثُمَّ قَالَ: مَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَادِحًا أَخَاهُ لَا مَحَالَةَ فَلْيَقُلْ: أَحْسِبُ فُلَانًا وَاللَّهُ حَسِيبُهُ، وَلَا أُزَكِّي عَلَى اللَّهِ أَحَدًا، أَحْسِبُهُ كَذَا وَكَذَا إِنْ كَانَ يَعْلَمُ ذَلِكَ مِنْهُ

तर्जुमा: ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान बनि अबु बकरह अपने पिता अबु बकरह रद़यिल्लाहु अ़न्हु से उल्लेख करते हैं कि एक व्यक्ति ने नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने किसी की तारीफ की, तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कई बार यह इरशाद फ़रमाया:

मैं दिल का हाल या किसी के अंत को नहीं जानता हूँ।

" अफसोस! तूने अपने साथी की गर्दन काट दी। तूने अपने साथी की गर्दन काट दी।" फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: तुम में से जब किसी को अपने भाई की तारीफ करना ही हो तो यूँ कहे: "मैं फुलाने व्यक्ति को ऐसा समझता हूँ और अल्लाह खूब जानता है। और मैं दिल का हाल या किसी के अंत को नहीं जानता हूँ। मैं समझता हूँ कि वह ऐसा ऐसा है अगर उसका हाल जानता हो तो।"

यह हदीस़ शरीफ हमें सिखाती है कि हम किसी के अंत या उसके दिल की बात को नहीं बता सकते हैं। क्योंकि यह सभी मामले अनदेखी का हिस्सा हैं।

अच्छे और महान अखलाक़ का तकाज़ा है कि इंसान अपने भाई के अधिकार को जाने और जिसके वह लायक हो उसकी हो उसकी उस जैसी तारीफ करे। तारीफ करना एक तरह का शुक्र करना है। बेशक तारीफ का दिलों पर बड़ा असर पड़ता है। इससे भावनाएं उभरती हैं जैसे कि इससे अधिक भालाइयों करने की इच्छा पैदा होती है।

लेकिन तारीफ के असर के एतबार से लोग कई तरह के होते हैं।

कुछ तो तारीफ की वजह से घमंडी हो जाते हैं।

मैं दिल का हाल या किसी के अंत को नहीं जानता हूँ।

और कुछ तारीफ की वजह से महान लक्ष्यों यानी मक़सदों को प्राप्त करने में सुस्ती करने लगते हैं और जिस हालत पर वे होते हैं बस उसी को काफी समझते हैं और अपने दिल में कहते हैं हम जिस हाल में है वही काफी है। क्योंकि हम उस मर्तबे को पहुंच गए हैं कि लोग हमारी तारीफ करने लगे हैं और हम यही तो चाहते थे।

और कुछ लोग ऐसे होते हैं कि जब उनकी तारीफ की जाए तो शर्मा जाते हैं और बहुत हर्ज महसूस करते हैं और कुछ ऐसे होते हैं कि जब उनकी तारीफ की जाए तो उनके ईमान में ज़्यादती हो जाती है और अधिक नेक काम करने की कोशिश करते हैं कि वह ऐसे ही हो जाएं जैसा कि लोग उनके बारे में सोचते हैं।

तारीफ करना जैसा कि हमने पहले बयान किया एक तरह से शुक्र अदा करना है जैसे कि यह अच्छाई और खूबी का ऐतराफ करना है। जब किसी में कोई अच्छाई हो तो उसे मानना चाहिए और उस पर उसकी तारीफ करना चाहिए। हाँ उसमें किसी तरह की ज़्यादती से काम नहीं लेना चाहिए।

कभी-कभार कुछ लोग कुछ पाने के लिए झूठी तारीफ की जाती है जो कि किसी भी तरह से सहीह नहीं है न धार्मिक तौर से और न ही समाजिक तौर से।

मैं दिल का हाल या किसी के अंत को नहीं जानता हूँ।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बहुत से सहाबा ए करिम रद़ियिल्लाहु अन्हुम की तारीफ की और बहुत सों के इस्लाम अच्छा होने और अल्लाह के प्रति उनके सच्चे होने की वजह उन्हें जन्नत की खुशखबरी भी दी।

एक सच्चा मोमिन अपनी हर बात में सच्चा होता है। उसकी दलील मज़बूत और साफ़ होती है। जैसा वह सामने से होता है वैसा ही वह अंदर से होता है। वह गिरगिट की तरह रंग नहीं बदलता है। यानी वह दो-रुख़ा नहीं होता है।

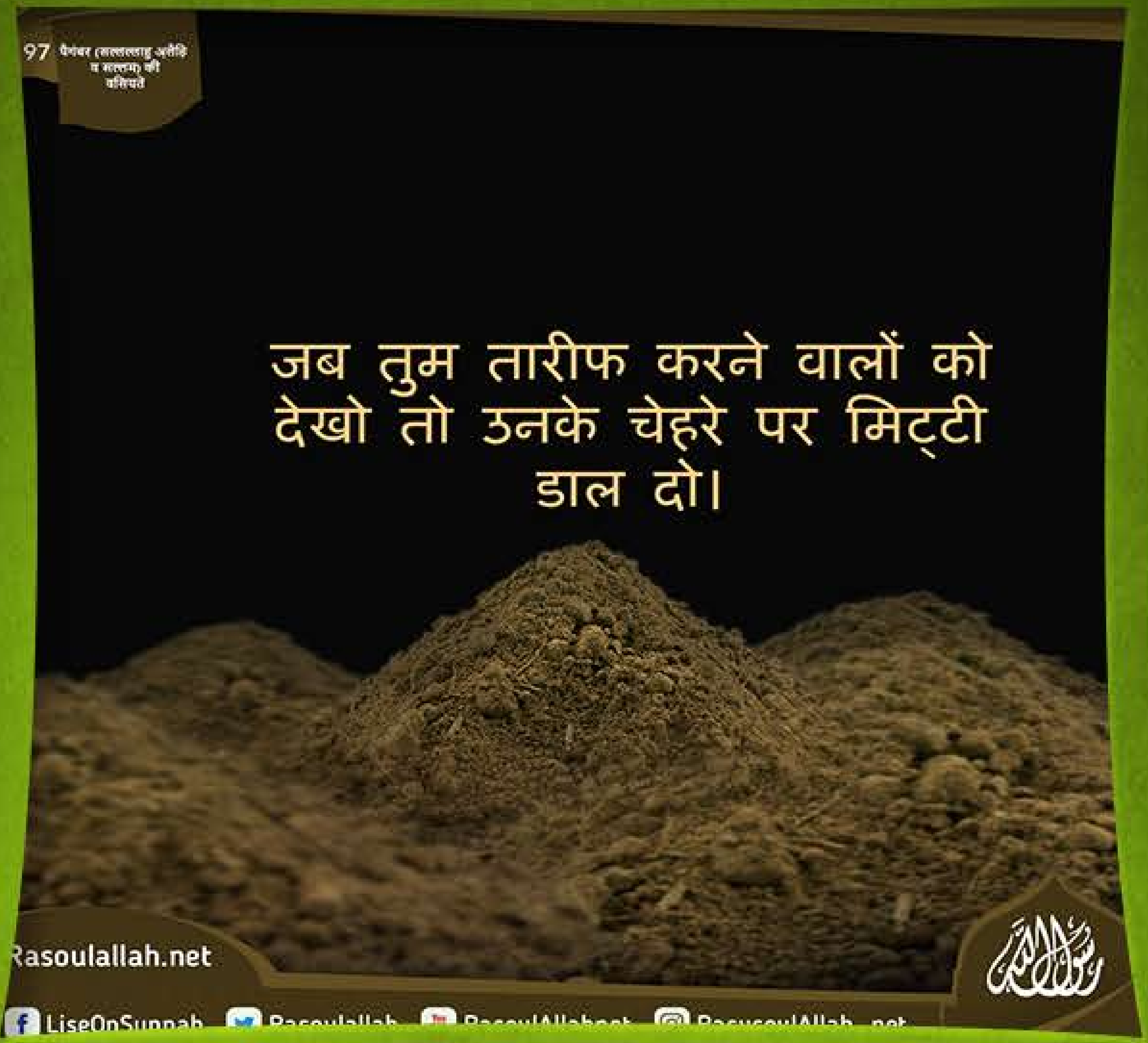

जब तुम तारीफ करने वालों को देखो तो उनके चेहरे पर मिट्टी डाल दो।

عَنْ هَمَّام بْنِ الْحَارِث أَنَّ رَجُلًا جَعَلَ يَمْدَحُ عُثْمَانَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ
-فَعمَدَ الْمِقْدَادُ- رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ- فَجَثَا عَلَى رُكْبَتَيْهِ - وَكَانَ رَجُلًا ضَخْمًا
فَجَعَلَ يَحْثُو فِي وَجْهِهِ الْحَصْبَاءَ، فَقَالَ لَهُ عُثْمَانُ مَا شَأْنُكَ؟ فَقَالَ: إِنَّ
رَسُولَ اللَّه صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ
إِذَا رَأَيْتُمْ الْمَدَّاحِينَ فَاحْثُوا فِي وُجُوهِهِمْ التُّرَابَ"

तर्जुमा: हज़रत हम्माम बिन हारिस बयान करते हैं कि एक व्यक्ति हज़रत उसमान रदियल्लाहु अन्हु की तारीफ करने लगा।

जब तुम तारीफ करने वालों को देखो तो उनके चेहरे पर मिट्टी डाल दो।

ह़ज़रत मक़िदाद रद़यिल्लाहु अन्हु अपने घुटनों के बल बैठे - वह मोटे तड़ंगे व्यक्ति थे- और तारीफ करने वाले के मुंह पर कंकड़ियाँ डालने लगे। तो ह़ज़रत ऊ़समान ने उनसे कहा कि तुम्हे क्या हो गया है? तो उन्होंने जवाब दिया: " बेशक अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम ने इरशाद फ़रमाया है:" जब तुम तारीफ करने वालों को देखो तो उनके चेहरे पर मिट्टी डाल दो। "

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम किसी की बहुत ज़्यादा तारीफ पसंद नहीं करते थे। क्योंकि इसमें अधिकता और ज़्यादती हो जाती है जिसमें आमतौर झूठी बातें बयान हो जाती हैं जो चापलूसी के तौर पर उस तारीफ करने वाले के चेहरे यह उसकी लड़खड़ाती ज़बान से साफ जाहिर होती हैं।

कभी-कभी कुछ सहाबा ए करिाम रद़यिल्लाहु अ़न्हुम अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम से अपनी मोहब्बत को जाहिर करने के लिए आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तारीफ करते तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उनका का दिल रखने के लिए उन्हें इजाज़त देते और उनकी तारीफ कुबूल करते लेकिन। अगर आप कभी-कभार कुछ ज़्यादती देखते तो बड़े अदब और एहतराम से मना फरमा देते।

कोई महिला किसी महिला से मिलने के बाद अपने पति से उसका हुलिया बयान न करे

عَنْ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رسول الله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ:
لا تُبَاشِرُ الْمَرْأَةُ الْمَرْأَةَ، فَتَنْعَتَهَا لِزَوْجِهَا، كَأَنَّهُ يَنْظُرُ إِلَيْهَا

तर्जुमा: हज़रत इब्ने मसऊद रद़यिल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "कोई महिला किसी महिला से मिलने के बाद अपने पति से उसका हुलिया बयान न करे कि जैसे कि वह उसे देख रहा है।"

कोई महिला किसी महिला से मिलने के बाद अपने पति से उसका हुलिया बयान न करे

अच्छे अखलाक़ में से यह भी है कि मुसलमान हर उस चीज़ से अपनी निगाह नीची रखे जिसे देखना उसके लिए जायज़ नहीं है। ऐसा काम करने से बचे जिसकी उसके लिए इजाजत नहीं है। और ऐसी चीज़ के जिक्र करने से बचे जो उसके लिए मुनासिब नहीं। इस मामले में मर्द और औरत दोनों बराबर हैं।

यह हदीस़ शरीफ केवल महिला के साथ ही खास नहीं है। लेकिन नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसमें महिला को संबोधित किया है क्योंकि ज़्यादातर महिलाएं जब एक जगह इकट्ठा होती हैं तो बिना शर्म और हया के ही एक दूसरे के सामने कपड़े उतार देती हैं और अपने और अपने पतियों के दरमियान के निजी मामलों को बयान कर देती हैं और बहुत से छुपे हुए राज़ों और मामलों को जाहिर कर देती हैं। तथा कभी-कभार तो कुछ औरतें दूसरी औरतों के बारे में वह सब कुछ जान जाती हैं जो सालों साल साथ रहने के बावजूद उनके पति भी नहीं जान पाते हैं।

यही वजह है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस हदीस़ में औरत को संबोधित किया ताकि उन्हें इस बुरी आदत से रोकें कि हो सकता है कि वे इस बुरे व शर्मनाक व्यवहार से बाज़ आ जाएं।

कोई महिला किसी महिला से मिलने के बाद अपने पति से उसका हुलिया बयान न करे

यह जान लें कि तमाम उन चीजों से निगाह नीची रखना जरूरी है जिन्हें देखना हराम व नाजायज़ है। बिना किसी सख्त जरूरत के औरत को ना तो मर्दों के वे अंग देखना जायज़ है जिन्हें छुपाना जरूरी है और ना ही औरतों के वे अंग देखना जायज़ है।

हर मर्द और औरत इसकी आजमाइश में पड़ सकते हैं। इसीलिए याद रखें कि बिना किसी सख्त जरूरत के किसी भी मुसलमान मर्द और औरत को ना तो मुसलिम मर्द और औरत के सत्र (बदन का वह अंग जिसका छुपाना अनिवार्य (ज़रूरी) है।) को देखना जायज़ और ना ही गैर मुस्लिम मर्द और औरत के सत्र को।

यह कितनी महान वसियित है जो तमाम पुरुषों और औरतों की इज़्ज़त व आबरू की हिफाज़त करती है और समाज को बुरे अखलाक़ और बद चलनी से बचाती है।

ऐ लोगों! दुश्मन के साथ जंग की ख्वाहिश ना रखो

عَنْ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي أَوْفَى - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي بَعْضِ أَيَّامِهِ الَّتِي لَقِيَ فِيهَا الْعَدُوَّ انْتَظَرَ حَتَّى مَالَتْ الشَّمْسُ ثُمَّ قَامَ فِي النَّاسِ فَقَالَ أَيُّهَا النَّاسُ، لَا تَمَنَّوْا لِقَاءَ الْعَدُوِّ وَسَلُوا اللَّهَ الْعَافِيَةَ، فَإِذَا لَقِيتُمُوهُمْ فَاصْبِرُوا، وَاعْلَمُوا أَنَّ الْجَنَّةَ تَحْتَ ظِلَالِ السُّيُوفِ، ثُمَّ قَالَ: اللَّهُمَّ مُنْزِلَ الْكِتَابِ وَمُجْرِيَ السَّحَابِ وَهَازِمَ الْأَحْزَابِ اهْزِمْهُمْ وَانْصُرْنَا عَلَيْهِمْ

तर्जुमा: हज़रत अब्दुल्लह बनि अबु औफ़ा रद़यिल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम ने एक बार जंग के दिनों में सूरज ढलने का इंतजार कयिा फरि आप सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम ने सहाबा ए करिाम रद़यिल्लाहु अन्हुम को संबोधति करते हुए इरशाद फ़रमाया:

ऐ लोगों! दुश्मन के साथ जंग की ख्वाहिश ना रखो

"ऐ लोगों! दुश्मन के साथ जंग की ख़्वाहिश ना रखो। बल्कि अल्लाह तआ़ला से अमन और शांति की दुआ किया करो। लेकिन जब दुश्मन से मुठभेड़ हो ही जाए तो फिर सब्र से काम लो (यानी डटे रहो।) याद रखो कि जन्नत तलवारों के सायों के तले है। उसके बाद आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यूं दुआ़ की:

"ए किताब उतारने वाले! बादल भेजने वाले! दुश्मनों के लश्करों हार देने वाले अल्लाह! उन्हें हार दे और उनके मुकाबले में हमारी मदद कर।"

इस्लाम अमन और शांति का धर्म है वह किसी भी तरह की अशांति को कुबूल नहीं करता है। किसी को भी इस्लाम अपनाने पर मजबूर नहीं करता है। हमेशा भलाई ही का आदेश देता है और केवल बुराई से ही मना करता है। सारी दलीलें इस बात को बताती हैं कि इस्लाम तलवार के जरिए नहीं फैला है। नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उस समय तक जंग नहीं करते थे जब तक की आपको उस पर मजबूर नहीं किया जाता था जैसे कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उस समय तक किसी पर भी हमला नहीं करते थे जब तक कि आप उसकी तरफ से हमला करने की पहल ना देख लेते थे। यही वजह है कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने सहाबा से इरशाद फरमाया: "दुश्मन से मिलने की तमन्ना मत करो।" यानी उनसे लड़ने की ख़्वाहिश मत रखो।

ऐ लोगों! दुश्मन के साथ जंग की ख्वाहिश ना रखो

"और अल्लाह से अमन और शांति की दुआ मांगो।" क्योंकि यह तुम्हारे लिए इससे बेहतर है कि तुम्हारी दुश्मन के साथ मुठभेड़ हो जिसकी वजह से तुम्हें कोई मुसीबत पहुंच जाए। लेकिन इस मामले में अल्लाह की आज्ञा का पालन करो और जब जंग के सिवा कोई रास्ता ना बचे तो डटकर जंग करो।

अत:यह दोस्त और दुश्मन दोनों के साथ न्याय और इंसाफ है।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कहने: "जब तुम्हारी दुश्मनों के साथ मुठभेड़ हो तो सब्र से काम लो।" का मतलब है कि तुम डटे रहो और भक्रिो मत। क्योंकि डटे रहने में कामयाबी और जीत और भागने में हार है। जंग में डटे रहो और शहादत पाने की तमन्ना करो ताकि तुम्हें हमेशा कि जिंदिगी नसीब हो जाए। अपनी तलवारों से अल्लाह के दुश्मनों के दिलों में हैबत और डर पैदा करो। जंग के मैदान में जो मुसीबतें और परेशानियाँ आएं उन्हें बर्दाश्त करो और उन पर अल्लाह पाक से सवाब की उम्मीद करो। ये सभी माने सब्र के माना में शामिल हैं। याद रखें कि सब्र मैदान-ए-जंग में एक हैरतअंगेज शक्ति और ताकत है।

मैं अल्लाह और उसकी क़ुदरत की पनाह मांगता हूँ उस चीज़ की बुराई से जिसे मैं महसूस कर रहा हूँ और जिसका मुझे खतरा है।

عَنْ عُثْمَانَ بْنِ أَبِي الْعَاصِ الثَّقَفِيِّ، أَنَّهُ شَكَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَجَعًا يَجِدُهُ فِي جَسَدِهِ مُنْذُ أَسْلَمَ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ضَعْ يَدَكَ عَلَى الَّذِي تَأَلَّمَ مِنْ جَسَدِكَ، وَقُلْ بِاسْمِ اللَّهِ "ثَلَاثًا" وَقُلْ سَبْعَ مَرَّاتٍ: أَعُوذُ بِاللَّهِ وَقُدْرَتِهِ مِنْ شَرِّ مَا أَجِدُ وَأُحَاذِرُ

तर्जुमा: हज़रत उसमान बनि अबु अल-आस सक़फ़ी बयान करते हैं कि उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अपने बदन के उस दर्द की शिकायत की जिसे वह उस समय से महसूस कर रहे थे जबसे वह इस्लाम लाए थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: अपना हाथ दर्द की जगह पर रख कर तीन बार "बिस्मिल्लिाह" और सात बार यह दुआ पढ़े "

मैं अल्लाह और उसकी क़ुदरत की पनाह मांगता हूँ उस चीज़ की बुराई से जिसे मैं महसूस कर रहा हूँ और जिसका मुझे खतरा है।

(अऊज़ु बिल्लाहि व क़ुदरतिहि मिन शर्रि मा अजिदु व उहाज़िरु)

यानी मैं अल्लाह और उसकी क़ुदरत की पनाह मांगता हूँ उस चीज़ की बुराई से जिसे मैं महसूस कर रहा हूँ और जिसका मुझे खतरा है।"

इस हदीस़ शरीफ में इस बात का सबूत है कि अपने चाहने वालों से बिना रोए-धोए किसी परेशानी की शिकायत करना जायज़ है कि हो सकता है कि उनसे कुछ तसल्ली मिल जाए या नेक लोगों की बारगाह में भी शिकायत कर सकते हैं कि शायद उनके यहाँ कुछ बरकत नसीब हो जाए या दुआएं मिल जाएं या कुछ नसीहत मिल जाए जो परेशानियों और मुश्किलों के बर्दाश्त करने में मददगार साबित हो।

सहाबा ए करिम रदियल्लाहु अन्हुम नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में अपनी मुसीबतों की शिकायत करते थे और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी इस पर उनकी कुछ निंदा नहीं करते थे क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जानते थे कि वे लोग रोने-धोने के तौर पर शिकायत नहीं करते हैं बल्कि वे चाहते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो सबसे बड़े हकीम और डॉक्टर की हैसियत रखते हैं उन्हें जिस्मानी और रूहानी बीमारियों की दवा दें।

मैं अल्लाह और उसकी क़ुदरत की पनाह मांगता हूँ उस चीज़ की बुराई से जिसे मैं महसूस कर रहा हूँ और जिसका मुझे खतरा है।

उसकी वजह वह मोहब्बत व प्रेम और दया तथा नरमी थी जो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम के दिल में उन सहाबा ए करिाम के लिए मौजूद थी। क्योंकि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम उन पर खुद उनसे ज़्यादा रहम दिल और मेहरबान यानी दयालु थे।

इस दुआ़ को सात बार पढ़ने में कोई राज़ है जिसे हम नहीं जानते लेकिन उसे मानना हम पर जरूरी है। दुआ में बड़ी बीमारियों का इलाज होता है।अतः दुआ़ उम्मीद और आरज़ू पूरी होने का सबसे बड़ा जरिया है। लेकिन दुआ़ पर भरोसा करके बीमारी की दवा लेना छोड़ नहीं देना चाहिए बल्कि दवा भी लेनी चाहिए और दवा लेते समय अल्लाह से दुआ़ करनी चाहिए कि वह अपनी कुदरत से उस दवा को लाभदायक और फायदेमंद बनाए।

मिस्वाक किया करो। क्योंकि मिस्वाक मुंह को साफ़ करती है और अल्लाह को खुश करती है।

عَنْ أَبِي أُمَامَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "تَسَوَّكُوا؛ فَإِنَّ السِّوَاكَ مَطْهَرَةٌ لِلْفَمِ، مَرْضَاةٌ لِلرَّبِّ، مَا جَاءَنِي جِبْرِيلُ إِلَّا أَوْصَانِي بِالسِّوَاكِ، حَتَّى لَقَدْ خَشِيتُ أَنْ يُفْرَضَ عَلَيَّ وَعَلَى أُمَّتِي، وَلَوْلَا أَنِّي أَخَافُ أَنْ أَشُقَّ عَلَى أُمَّتِي، لَفَرَضْتُهُ لَهُمْ، وَإِنِّي لَأَسْتَاكُ حَتَّى لَقَدْ خَشِيتُ أَنْ أُحْفِيَ مَقَادِمَ فَمِي

तर्जुमा: ह़ज़रत अबू उमामह रद़यिल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "मिस्वाक किया करो।

मिस्वाक किया करो। क्योंकि मिस्वाक मुंह को साफ़ करती है और अल्लाह को खुश करती है।

क्योंकि मस्िवाक मुंह को साफ़ करती है और अल्लाह को खुश करती है। जबिरईल अ़लैहस्िसलाम जब भी मेरे पास आते तो मस्िवाक करने का ज़रूर आदेश देते यहाँ तक कि मुझे लगा कि वह मुझ पर और मेरी उम्मत पर फ़र्ज़ (अनविार्य) कर दी जाएगी। और अगर मुझे मेरी उम्मत पर दुश्वारी का डर न होता तो मैं उस पर मस्िवाक फ़र्ज़ (अनविार्य) कर देता। मैं तो इस कदर मस्िवाक करता हूँ कि मुझे लगता है कि मसूड़े छील डालूंगा। "

मस्िवाक फतिरती सुन्नतों में से एक सुन्नता है। इसीलिए खाने के बाद मुंह या दातों में लगी हुई चीज से मुंह साफ करने और बदबू वगैरह दूर करने के लिए मस्िवाक का इस्तेमाल करना जरूरी है ताकि मुंह और दाढ़-दांत सूजन और हर तरह की बीमारी से सुरक्षति रहें।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के कहने "मस्िवाक मुंह को साफ करती है।" का मतलब है कि वह मुंह की बीमारयिों और जरासीम को दूर करती है।

मुंह की बहुत सी खतरनाक बीमारयिाँ हैं उनमें से एक दांतो का झड़ना भी है। यह एक ऐसी बीमारी है कि इसमें दांत झड़कर गरिने लगते हैं यहाँ तक कि मुंह में एक भी दांत नहीं बचता है।

मिस्वाक किया करो। क्योंकि मिस्वाक मुंह को साफ़ करती है और अल्लाह को खुश करती है।

उस समय इंसान को दातों की कीमत का पता चलता है और फरि मस्िवाक (या ब्रश) से उन्हें साफ़ न करने पर अफसोस करता है। परहेज़ इलाज से बेहतर है जैसा कि डॉक्टर्स कहते हैं। और तंदुरुस्ती लोगों के सरों का ताज है। उसकी कीमत वही जानता है जसिके पास यह नहीं होती है।

और जैसा कि हिम जानते हैं कि मुंह पेट का कुदरती रास्ता है- जो पेट की पेट बीमारयिों का घर है- और हाजमे की जगह, सीने और फेफड़ों तक वायरसों के जाने का खुला रास्ता है इसीलएि हर मुसलमान (बल्कि हिर इंसान) को चाहएि कि वह हमेशा मुंह की सफाई का ख्याल रखे खासकर जब मुंह से बदबू वगैरह महसूस करे। तथा मस्िवाक करने के बहुत से दूसरे फायदे भी हैं।

जब आपको यह पता चल गया कि मिस्िवाक मुंह को साफ रखती है तो जाहरि सी बात है कि कुिरआन मजीद पढ़ने, जक्रि करने, तफसीर और ह़दीस़ या दूसरी दीनी कतिाबें पढ़ने से पहले मस्िवाक करना अल्लाह के यहाँ बहुत प्यारा काम है। तो जो पाक और साफ मुंह के जरएि अल्लाह का जक्रि करे यकीनी तौर पर वह अल्लाह के नजदीक उस व्यक्ति से बेहतर होगा जो मुंह को साफ कएि बनिा उसका जक्रि करे।

मिस्वाक किया करो। क्योंकि मिस्वाक मुंह को साफ़ करती है और अल्लाह को खुश करती है।

आमतौर पर जनि समयों में मस्वािक करना बहुत ज़्यादा मुस्ताहब है वह पांच हैं: बुजु करते समय, नमाज़ पढ़ने से पहले, क़ुरआन मजीद पढ़ने से पहले, सोकर उठते समय और जब मुंह की बू बदल जाए।

डॉक्टर्स भी आज के समय में मस्वािक करने पर बहुत ज़्यादा जोर देते हैं और उसको तंदुरुस्ती के लिए उन जरूरी चीज़ों में से समझते हैं जनिका हर इंसान को ख़्याल रखना चाहिए ताक मुिंह बल्क सिारा बदन बीमारयिों से महफूज़ रहे। क्योंक मुिंह वायरसों के जाने का कुदरती रास्ता है।

अगर नमाज़ की तकबीर हो जाए तो उसकी तरफ दोड़ कर मत आओ।

عَـنْ أَبِي هُرَيْـرَةَ – رَضِيَ اللَّـهُ عَنْـهُ –قَـالَ: سَـمعت رَسُـولُ اللَّـه صَـلَّى اللَّـهُ عَلَيْـه وَسَـلَّمَ يَقُـول: "إِذَا أُقِيمَـتْ الصَّـلَاةُ، فَـلَا تَأْتُوهَـا وَأَنْتُـمْ تَسْـعَوْنَ وَأْتُوهَـا تَمْشُـونَ عَلَيْكُمْ السَّكِينَةُ فَمَا أَدْرَكْتُمْ فَصَلُّوا، وَمَا فَاتَكُمْ فَأَتِمُّوا

तर्जुमा: ह़ज़रत अबू हुरैरा रद़यिल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना: "अगर नमाज़ की तकबीर हो जाए तो उसकी तरफ दोड़ कर मत आओ। बल्कि इत्मीनान व सुकून से चलते हुए आओ। तो जो (नमाज़ की रकातें) पा जाओ उन्हें पढ़ लो और जो छूट जाएं उन्हें पूरा करलो।"

अगर नमाज़ की तकबीर हो जाए तो उसकी तरफ दोड़ कर मत आओ।

नमाज़ बंदे और उसके अल्लाह के दरमयिान एक मज़बूत रशि्ता है। और उसकी आत्मा और जान उसे खूब दलि लगाकर पढ़ना है। इसीलिए जब कोई नमाज़ पढ़े तो उसे चाहिए कि खूब दलि लगाकर पढ़े।

इसी मकसद को पूरा करने के लिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम ने नमाज़ की तरफ दोड़ कर आने से मना कियिा है। क्योंकि दोड़ने से नमाज़ में लगाओ और इत्मीनान व सुकून नहीं हो पाता है जसिका होना ज़रूरी है। क्योंकि भागकर आने से सांस फूलने लगती है जसिकी वजह से इत्मीनान व सुकून और ठहराव खत्म हो जाता है।

और कभी भागकर आने से रास्ते में गरि भी सकता है या कसिी चीज़ से टकरा भी सकता है या उसके अलावा और भी कोई हादसा हो सकता है।

और भला वह नमाज़ की तरफ क्यों दौड़कर आ रहा है जबकि अल्लाह ने उसकी नयित के मुताबकि उसे सवाब देने का उससे वादा फरमाया है। क्योंकि जैसा कि सिबको मालूम है कामों का दारोमदार नयितों पर है।

अगर नमाज़ की तकबीर हो जाए तो उसकी तरफ दोड़ कर मत आओ।

तो जो व्यक्ति अपने घर से वुज़ू बनाकर नमाज़ के लिए निकला और उससे एक या दो तीन रकाते छूट गई तो उसमें कोई हर्ज की बात नहीं है बशर्ते कि वह मुनासिब समय पर घर से निकला हो और किसी दुनिया की चीज़ में व्यस्त ना हुआ हो। हाँ अगर वह मस्जिद के नज़दीक हो तो अपनी रफ्तार को थोड़ा सा बढ़ा दे ताकि बगैर थके वह जमात में शामिल हो जाए।

सफर करो ताकि फायदा हासिल कर सको।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ – رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ – أَنَّ النبي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "سَافِرُوا تَرْبَحُوا، وَصُومُوا تَصِحُّوا، واغزُوا تَغنَمُوا

तर्जुमा: हज़रत अबू हुरैरा रद़यिल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "सफर करो ताकि फायदा हासिल कर सको। रोज़ा रखो ताकि तंदुरुस्त रहो और अल्लाह की राह में जिहाद करो ताकि गनीमत मिले।"

सफर करो ताकि फायदा हासिल कर सको।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक बेहतरीन शिक्षक व पैगंबर और एक अच्छे डॉक्टर व ऐसे हकीम हैं जिनके दिल से हिकमतों के चश्मे फूटते हैं।

जिनकी वसियतें अच्छे अखलाक व ऊंचे विचारों और बेहतरीन व्यवहार के नियम और हर तरह से अच्छी व महान जिंदगी का तरीका हैं। ऊपर बयान हुई वसियत उन्हीं लाभदायक वसियतों में से एक है जिनको हर सूरत में मद्देनज़र रखते हुए उन पर अमल करना चाहिए।

हदीस़ पाक का मतलब यह है कि जो व्यक्ति भी अपना घरबार छोड़कर अल्लाह की लम्बी-चौड़ी ज़मीन में सफर करता है ताकि उसकी राह में जिहाद करे या ज्ञान हासिल करे या रोजी- रोटी कमाए या कोई और जायज़ लक्ष्य को पूरा करे तो वह जिस जगह सफर करके जाता है वहाँ उसे उसकी मुराद मिल जाती है

जो व्यक्ति अल्लाह की तरफ हिजरत के इरादे से अपने घर से निकले और रास्ते ही में उसे मौत आ जाए तो बेशक उसका सवाब अल्लाह के यहाँ है क्योंकि हर काम का दारोमदार नियत पर है।

सफर करो ताकि फायदा हासिल कर सको।

कभी-कभी सफर करना वाजिब (अनिवार्य) होता है जैसे कि हज की अदायगी के लिए सफर करना, ज्ञान के प्राप्त करने के लिए सफर करना जबकि उसके शहर में कोई ज्ञान सिखाने वाला ना हो और रोजगार के लिए सफर करना जबकि उसके शहर मैं जिंदगी बसर करना दुश्वार हो जाए या कमाने का कोई जरिया ना हो।

इसी तरह उस समय भी सफर करना अनिवार्य वाजिब (अनिवार्य) है जबकि उसे फितने में पड़ने का अंदेशा हो। और कभी सफर करना मुस्ताहब यानी बेहतर होता है जबकि उससे दुनिया में फैली हुई अल्लाह की निशानियों में गौर व फिक्र करना मकसूद हो या तंदुरुस्ती हासिल करना मकसूद हो। क्योंकि सफर से नफ्स (आत्मा) को सुकून मिलता है और बदन को ताकत मिलती है जैसा कि आगे इस का बयान आएगा। इनके अलावा चीजों में सफर करना जायज़ है जबकि गुनाह और अल्लाह की नाफरमानी के लिए सफर करना हराम और नजायज़ है।

सफर करने के बारे में लोगों के अलग अलग विचार हैं कुछ तो यह समझते हैं कि सफर के बहुत से फायदे हैं जिन्हें किसी इंसान को छोड़ना नहीं चाहिए जबकि कुछ लोग यह कहते हैं कि सफर में बहुत सी परेशानियाँ और दुश्वारियाँ हैं और उसके कुछ भी महत्वपूर्ण फायदे नहीं हैं।

सफर करो ताकि फायदा हासिल कर सको।

मुसाफरि को सफर के दौरान ऐसी चीज़ें मलिती हैं जनिसे उसकी आत्मा को सुकून मलिता है। वह खुश होती है। उसके अंदर चुस्ती आती है। उसके वचिार में तरक्की होती है। अल्लाह कि वहि्दानयित (एकता) और उसकी महान कुदरत पर दलीलें देखकर उसके इमान में ज़्यादती होती है तथा उसे रोज़गार अलग मलिता है जसिसे वह अपने धर्म और दुनयिा को सुरक्षति रख सकता है। और जायज़ माल के प्राप्त करने से जदिंगी को अच्छा बना सकता है।

तो इससे पता चलता है कि सिफर में सुकून और तंदुरुस्ती छुपी हुई हैं। और यह दोनों ऐसी महान नेमतें हैं जनिमें ईमान के बाद सभी नेमतें हैं।

सफर अज़ाब का एक टुकड़ा है।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "السَّفَرُ قِطْعَةٌ مِنْ الْعَذَابِ، يَمْنَعُ أَحَدَكُمْ طَعَامَهُ وَشَرَابَهُ وَنَوْمَهُ، فَإِذَا قَضَى نَهْمَتَهُ فَلْيُعَجِّلْ إِلَى أَهْلِهِ

तर्जुमा: ह़ज़रत अबू हुरैरा रद़यिल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "सफर अ़ज़ाब का एक टुकड़ा है। आदमी को खाने-पीने और सोने (हर एक चीज़) से रोक देता है। इसलिए जब कोई अपनी जरूरत पूरी कर चुके तो फौरन घर वापस आ जाए।"

सफर अज़ाब का एक टुकड़ा है।

इस वसयित में नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक हकीकी मामले की खबर दी है जसिमें कोई शक व शुभा नहीं है। वह यह है कि सफर अज़ाब का एक टुकड़ा है। वह आदमी को खाने-पीने और सोने से रोक देता है। यानी सफर में इंसान उस समय में खाना नहीं खा सकता है जसिमें वह चाहे। इतनी मकिदार में नहीं खा सकता है जतिनी वह पसंद करे। और उस जगह में नहीं खा सकता है जहाँ वह खाना चाहे। उस तरीके से नहीं खा सकता है जैसे वह चाहे। और ऐसे व्यक्ति के हाथों से नहीं खा सकता है जसिे वह पसंद करता हो। अतः यह सब चीज़ें उसे सफर में नहीं मलि सकती हैं। इसी तरह नींद जो के बदन के लिए सुकून है वह भी सरि्फ घर पर, खास बसि्तर पर मुनासबि माहौल, मुनासबि समय और मुनासबि कैफयित में ही सही तौर पर पूरी हो सकती है। सफर में सही तौर पर पूरी नहीं हो सकती है।

तो इससे पता चला कि बेशक सफर एक तरह का अज़ाब है जसिे इंसान दुनयिा में बर्दाश्त करता है। तथा सफर में वह अजनबयित महसूस करता है। तथा घरवालों, दोस्तों और शहर के माहौल और उनके अलावा उन चीजों से दूरी अलग महसूस करता है जनिकी उसके दलि में यादें होती हैं।

सफर अज़ाब का एक टुकड़ा है।

इसके अलावा उसे उन खतरों और परेशानियों का अलग सामना करना पड़ता है जो उसे एक जगह से दूसरी जगह जाने में होती हैं भले ही सफर करने का ज़रिया कितना ही आसान व आराम देने वाला और तेज चलने वाली ही क्यों न हो। क्योंकि सफर सफर ही है।

लेकिन कभी-कभार सफर करना बहुत ज़्यादा जरूरी होता है। बाहर हाल इंसान को चाहिए कि वह जब सफर में अपनी जरूरत को पूरा कर ले तो फौरन अपने शहर अपने घर वालों के पास वापस आ जाए जैसा कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम ने हमें इसका आदेश दिया है। क्योंकि देखा जाता है कि मुसाफिर सफर से घर वापस आता है तो वह हर तरह से बहुत ज़्यादा सुकून महसूस करता है।

इंसान कितना ही सफर का आदी हो चुका हो लेकिन फिर भी वह सफर में परेशानी जरूर महसूस करता है क्योंकि बेशक उसे अपने शहर, घर, परिवार वालों और अपने बिस्तर की जरूरत होती है। लिहाज़ा उसे चाहिए कि वह इस महान वसीयत पर अमल करे और अपनी जरूरत पूरी करने के बाद अपने आप को बिना परेशानी में डाले हुए और बे फायदे काम में समय बर्बाद किये बगैर फौरन अपने घर वापस आ जाए।

इस लिए ज्ञान प्राप्त न करो कि इसकी वजह से तुम उलमा (विद्वानों) पर गर्व करो।

عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ:
"لَا تَعَلَّمُوا الْعِلْمَ لِتُبَاهُوا بِهِ الْعُلَمَاءَ، وَلَا لِتُمَارُوا بِهِ السُّفَهَاءَ، وَلَا تَخَيَّرُوا بِهِ الْمَجَالِسَ، فَمَنْ فَعَلَ ذَلِكَ فَالنَّارُ النَّارُ"

तर्जुमा: हज़रत जाबरि बनि अब्दुल्लह रद़यिल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "इस लिए ज्ञान प्राप्त न करो कि इसकी वजह से तुम उलमा (विद्वानों) पर गर्व करो। न ही इस लिए कि जाहलिों (बेवकूफ़ों) से झगड़ा करो और ना ही इसलिए कि इसके जरिए मजलसिों (सभाओं) में बरतरी तलाश करो। तो जसिने ऐसा कयिा तो उसके लिए आग ही आग है।"

इस लिए ज्ञान प्राप्त न करो कि इसकी वजह से तुम उ़लमा (विद्वानों) पर गर्व करो।

यह वसयित उस व्यक्ति के लिए है जो ज्ञान हासिल करता है और उसके हासिल करने में मेहनत और मशक्कत बर्दाश्त करता है बल्कि अपनी सारी उम्र उसी में गुज़ार देता है कि उसे चाहिए की इखलास से काम ले यानी सिर्फ अल्लाह की रज़ा और खुशी के लिए ज्ञान प्राप्त करे और तक्वा यानी परहेज़गारी इख्तियार करे। क्योंकि परहेज़गारी से ज्ञान और पहचान के दरवाज़े खुलते हैं।

चूंकि इखलास ही पर हर काम के सही होने और उसके कुबूल होने का दारोमदार है और तक्वा यानी परहेज़गारी तमाम तरह की भलाइयों को शामिल है तो दुनिया और आखिरत में लाभदायक ज्ञान प्राप्त उसी समय हो सकता है जबकि उसे अल्लाह की रज़ा और खुशी के लिए हासिल किया जाए और उसके हासिल करने में उस अल्लाह की आज्ञा का पालन करने से मदद ली जाए जिसके कब्ज़े में सभी ज्ञानों की कुंजियाँ हैं।

ज्ञान उन तमाम मक़सदों में से महत्वपूर्ण और बेहतरीन मकसद है जिनके हासिल करने की एक मोमिन कोशिश करता है। क्योंकि ज्ञान ईमान और सच्चे यकीन के लिए दिलों को खोलने की कुंजी है। अतः ज्ञान के बगैर कोई ईमान नहीं होता है और यकीन केवल इमान के बाद ही होता है।

इस लिए ज्ञान प्राप्त न करो कि इसकी वजह से तुम उलमा (विद्वानों) पर गर्व करो।

तो जो चाहे कि अल्लाह उस पर ज्ञान के दरवाज़े खोल दे तो वह उसे अल्लाह ही से और अल्लाह ही के लिए हासिल करे।

लिहाज़ा छात्र को चाहिए कि वह अपने नफ़्स की ख्वाहिश, लालच, घमंड या दुनिया में किसी तरह के स्थान की ख्वाहिश से अपने आपको पाक और साफ रखे और सिर्फ अल्लाह की रज़ा के लिए ही ज्ञान प्राप्त करे। इसीलिए नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम ने छात्र को आदेश दिया कि अगर उसके लिए ज्ञान हासिल करने के दरवाजे खोल दिये जाएं तो वह अपने ज्ञान से दुसरे उलमा (विद्वानों) के सामने गर्व करने की ख्वाहिश से पाक व साफ रहे। क्योंकि गर्व बंदे उसके अल्लाह के दरमियान संबंध को खत्म कर देता है।

क्योंकि यह एक तरह का घमंड है और घमंड करने वाले के लिए अल्लाह की रज़ा और खुशी में कोई हिस्सा नहीं है और ना ही जन्नत में उसके लिए कोई जगह है। उलमा ए करिम से गर्व करना एक तरह का फालतू झगड़ा भी है और हर तरह का झगड़ा बुरा है सिवाय उसके जो अच्छी तरह से किया जाए।

इस लिए ज्ञान प्राप्त न करो कि इसकी वजह से तुम उलमा (विद्वानों) पर गर्व करो।

पुरा जाहिल वह बेवकूफ है जो झूठा दावा करे कि उसके पास वह ज्ञान है जो फुलाने - फुलाने के पास नहीं है। सबसे बड़ी मुसीबत यह है कि एक आलिम किसी जाहिल पर गालिब आने के लिए उससे बहस करे।

क्योंकि इन दोनों में जमीन व आसमान का फर्क है।

इसी तरह से वह आलिम भी जो अपने इल्म (ज्ञान) से बादशाहों की मजलिसों (सभाओं) में बुलंद स्थान हासिल करने की कोशिश करे। क्योंकि ऐसे आलिम को बड़े से बड़ा बेवकूफ भी हकीर जानता है। तो नतीजा यह होता है कि जिस ज्ञान की बदौलत उसे इज़्जत मिलना चाहिए उसी की वजह से वह ज़लील व ख़्वार हो जाता है। क्योंकि इखलास और तक़्वे यानी परहेज़गारी के बगैर इल्म (ज्ञान) जहालत से ज़्यादा नुकसान दे है। और जो शख़्स ऊपर बयान किए हुए मक़सदों के लिए ज्ञान हासिल करे तो उसके लिए इस वसीयत के आखिर में सख़्त चेतावनी आई है। क्योंकि यह काम (यानी ऊपर बयान किये मक़सदो के लिए ज्ञान प्राप्त करना) इखलास और तक़्वे यानी परहेज़गारी से परे है। बल्कि इसमें घमंड, दिखावा और उनके अलावा दूसरी हलाक करने वाली आफते हैं।

जब शर्म ही न हो तो जो फिर जो चाहो करो।

عَـنْ أَبِي مَسْـعُودٍ- رَضِيَ اللَّـهُ عَنْـهُ - قَـالَ: قَـالَ النَّبِـيِّ صَـلَّى اللَّـهُ عَلَيْـهِ وَسَـلَّمَ: "إِنَّ مِمَّا أَدْرَكَ النَّاسُ مِنْ كَلَامِ النُّبُوَّةِ الْأُولَى: إِذَا لَمْ تَسْتَحِ فَافْعَلْ مَا شِئْتَ

तर्जुमा: हज़रत अबू मसऊद रद़यिल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि निबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "पहले पैगम्बरो के जो बयान लोगों को मिले उनमें से एक यह भी है कि:" जब शर्म ही न हो तो जो फिर जो चाहो करो।"

जब शर्म ही न हो तो जो फिर जो चाहो करो।

अखलाकी नयिमों पर तमाम पैगम्बरो का इत्तेफाक रहा है और किसी भी नयिम के बारे में उनमें से किसी का कोई इख्तलिाफ नहीं है।

और हया उन्हीं अखलाकी नयिमों में से एक नयिम है बल्कि उनमें सबसे अहम यही है। क्योंकि तमाम अखलाकी वशिषताएं इसी पर आधारति हैं। यही वजह है कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम ने ईमान की शाखाओं को बयान करते हुए खासतौर पर हया को बयान किया। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम ने इरशाद फरमाया: "ईमान की सत्तर और कुछ शाखाएं हैं। उनमें सबसे बुलंद "ला इलाहा इल्लल्लाह" है और सबसे नीची "रास्ते से तकलीफ देनी चीज़ को दूर करना है" और हया ईमान की एक शाखा है।"

हया एक ऐसा तराजू है जिसके जरिए सारे काम तोले जाते हैं। इसी से लोगों की अहमियित और उनके इमानी दर्जों का पता चलता है। तो जिसके अंदर हया जितिनी ज़्यादा होगी उतना ही मोमनिो के दरमियिान उसका मर्तबा बुलंद होगा और सब से बुलंद लोगों में उसका स्थान बढ़ता जाएगा।

जब शर्म ही न हो तो जो फिर जो चाहो करो।

हया वाले ही जन्नती लोग हैं। क्योंकि उनकी हया उन्हें अल्लाह और उसकी नेमतों के इनकार से रोक देती है। क्योंकि यह हया नहीं है कि इंसान इस बात को पहचानने के बाद कि अल्लाह ने उसे पैदा किया और हर तरह की नेमतों से नवाज़ा फिर उसी अल्लाह का और उसकी नेमतों का इनकार करे।

तथा हया इमान वालों को खुले और छुपे हुई हर तरह के दिखावे -जिसे छोटा शिर्क कहते हैं- से बचाती है। क्योंकि जो यह जान लेता है कि अल्लाह ही नेक कामों का बदला देता है तो फिर वह कभी अपने किसी काम में किसी को शरीक नहीं करता है।

खुलासा यह है कि हिया में हर तरह की भलाई है जैसा के नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम ने एक दूसरी ह़दीस़ पाक में इरशाद फरमाया है। हया सिर्फ भलाई और नेकी ही लाती है। हया ईमान के लिए ऐसे ही है जैसे कि बदन के लिए सर। वास्तव में हया हर उस बुरी चीज़ से रूकना है जिसे शरीअ़त बुरा समझती है और जिसे साफ तबीयत ना पसंद करती है। नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम ने हया की तारीफ यूं की है कि: "सर और जो कुछ (कान, आंख, मुंह, और जवान आदि) उसमें है और पेट और जो कुछ (दिल, गुप्त अंग आदि) उसमें है उसकी हफिाजत करो और मौत और उसके बाद के अंजाम को याद करो।"

अल्लाह से डरो। और अपनी औलाद के दरमियान इंसाफ करो।

عَنْ حُصَيْنٍ عَنْ عَامِرٍ قَالَ سَمِعْتُ النُّعْمَانَ بْنَ بَشِيرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا وَهُوَ
عَلَى الْمِنْبَرِ يَقُولُ: أَعْطَانِي أَبِي عَطِيَّةً، فَقَالَتْ عَمْرَةُ بِنْتُ رَوَاحَةَ: لَا أَرْضَى حَتَّى
تُشْهِدَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَتَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ فَقَالَ: إِنِّي أَعْطَيْتُ ابْنِي مِنْ عَمْرَةَ بِنْتِ رَوَاحَةَ عَطِيَّةً فَأَمَرَتْنِي أَنْ
أُشْهِدَكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: "أَعْطَيْتَ سَائِرَ وَلَدِكَ مِثْلَ هَذَا"؟، قَالَ: لَا
قَالَ: "فَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْدِلُوا بَيْنَ أَوْلَادِكُمْ" قَالَ: فَرَجَعَ فَرَدَّ عَطِيَّتَهُ

तर्जुमा: हुसैन बनि आमरि रद़ियल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं वह कहते हैं कि मैंने नौमान बनि बशीर रद़ियल्लाहु अ़न्हु को मबिर पर बयान करते हुए सुना:

अल्लाह से डरो। और अपनी औलाद के दरमियान इंसाफ करो।

"मेरे पति ने मुझे एक उपहार दिया। तो उ़मरह बिन्ते रवाह़ा (नौमान की माँ) ने कहा कि जब तक आप अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को इस पर गवाह ना बनाएं मैं राजी नहीं हो सकती। तो वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आए और कहा:" उ़मरह बिन्ते रवाह़ा से अपने बेटे को मैंने एक उपहार दिया। तो उन्होंने कहा कि पहले मैं आपको इस पर गवाह बना लूँ।" आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने पूछा उसी जैसा उपहार तुमने अपनी सभी औलाद को दिया है?" उन्होंने जवाब दिया:" नहीं।" तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया: "अल्लाह से डरो। और अपनी औलाद के दरमियान इंसाफ करो।" यह सुनकर वह वापस आए और अपना उपहार वापस ले लिया।"

तो इससे पता चलता है कि बच्चों के दरमियान इंसाफ करना जरूरी है जबकि उसके ना होने की सूरत में किसी तरह का नुकसान या रिश्ते में दरार पड़ने का अंदेशा हो जिसकी अक्सर जैसा कि ज़ियादातर होता है।

लिहाज़ा जब बच्चों के दरमियान इंसाफ से काम लेना जरूरी है तो पिता के लिए बिना उनकी इजाजत और रजामंदी के किसी भी बच्चे के साथ किसी तरह का खास व्यवहार करना जायज नहीं है।

अल्लाह से डरो। और अपनी औलाद के दरमियान इंसाफ करो।

अलग-अलग रिवायतों के साथ इस हदीस पाक में औलाद को कुछ देने में इंसाफ से काम लेने पर जोर दिया गया है जब तक कि कोई ऐसी जरूरत ना हो जो उनमें खास या अलग अलग व्यवहार करने का तकाजा करे। क्योंकि जरूरतों की वजह से मना की हुई चीजें जायज हो जाती हैं जैसा कि क़ुरआनऔर हदीस से मालूम है।

तो उपहार पर अनुमान लगाते हुए हम यह कह सकते हैं जहाँ तक हो सके बच्चों के दरमियान सारे मामलों में एक्सा व्यवहार करना चाहिए ताकि उनमें नफरत और दुश्मनी ना फेल है। क्योंकि औलाद में किसी एक को बढ़ावा देना कभी-कभी उनके दरमियान नफरत फैलने का कारण होता है जिसकी वजह से उनमें एक दूसरे से हसद और जलन हो जाती है और फिर लड़ाई झगड़े होते हैं जिन्हें यकीनन कोई भी माता-पिता नहीं चाहते हालांकि वही उनका कारण होते हैं।

लिहाज़ा माता-पिता को चाहिए कि वे बेहतरीन तरबियिती तरीकों से अपने बच्चों के दरमियान आपसी प्यार और मोहब्बत और आपस में समझ बूझ पैदा करें। और इसका सबसे अहम तरीका यह भी है कि जहाँ तक हो सके उनके दरमियान एकसा और बराबर व्यवहार करें।

अल्लाह से डरो। और अपनी औलाद के दरमियान इंसाफ करो।

यह भी ध्यान में रखें कि कोई भी चीज बांटते समय बराबर बराबर बांटे। क्योंकि जिसे किसी तरह से बुलंद कर दिया जाता है तो उसे किसी दूसरी तरफ से गिरा भी दिया जाता है। और अल्लाह अपने बंदों में से जिसे चाहता है अपनी जमीन का मालिक बनाता है। (और अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब देता है।)

अच्छाई करो और बुराई से बचो।

عن حرملة بن عبد الله بن أوس – رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ – قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُول الله، مَا تَأمُرنِي أَعمَلَ؟

قال: "يَا حرملة، ائْتِ المَعرُوفَ، وَاجْتَنِبِ المُنْكَر، وَانْظُر مَا يُعْجِبُ أُذُنَكَ أَنْ يَقُولَ لَكَ القَومُ إِذَا قُمْتَ مِنْ عِندَهِم، فَآتِه، وَانْظُرِ الذي تَكْرَهُ أَنْ يَقُولَ لَكَ القَومُ إِذَا قُمْتَ مِنْ عِنْدِهِمْ، فاجتنبه

तर्जुमा: ह़ज़रत ह़रमलह बनि औस रद़ियल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा: "ए अल्लाह के रसूल! आप मुझे क्या करने का आदेश देते हैं?"

अच्छाई करो और बुराई से बचो।

तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "ए हरमलह! अच्छाई करो और बुराई से बचो। और देखो कि जब तुम लोगों के पास से आओ तो तुम उनसे अपने बारे में क्या सुनना पसंद करते हो तो ऐसा ही करो। (जिसकी वजह से लोग तुम्हें अच्छा कहीं) और देखो कि जब तुम उनके पास से आओ तो तुम अपने बारे में उनसे क्या सुनना पसंद नहीं करते हो तो ऐसा करने से बचो। (जिसकी वजह से लोग तुम्हें बुरा कहें।)

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कहने:" अच्छाई करो।" का मतलब है कि उसे पहचानो। उसे हमेशा करो। उसे अपने दिल में महान जानो और दूसरों को भी उसके करने का आदेश दो। ये सब माने उसके करने के आदेश में शामिल हैं।

अच्छाई हर वह काम है जिसे इस्लाम और उसके साथ बुद्धि अच्छा समझती हो। नेक फितरत उसकी तरफ़दारी करती हो। पाक व साफ़ आत्माओं वालों को उससे राहत पहुंचती हो। मोमिन दिलों को उससे सुकून मिलता हो।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान "बुराई से बचो।" का मतलब है कि अपने आप को उससे दूर रखो और हमेशा उससे एहतियात बरतो।

अच्छाई करो और बुराई से बचो।

और नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान "और देखो कि जब तुम उनके पास से आओ तो तुम अपने बारे में उनसे क्या सुनना पसंद नहीं करते हो तो ऐसा करने से बचो। (जिसकी वजह से लोग तुम्हें बुरा कहें।)" से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पिछले फरमान "और देखो कि जब तुम लोगों के पास से आओ तो तुम उनसे अपने बारे में क्या सुनना पसंद करते हो तो ऐसा ही करो।

(जिसकी वजह से लोग तुम्हें अच्छा कहीं)" पर ज़ोर देना मक़सूद है। क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पहले एक चीज़ को बयान किया और फिर उसके मुकाबले की दूसरी चीज़ को बयान किया जैसे के भलाई के मुकाबले में बुराई को बयान करना। अच्छे के मुकाबले में बुरे को बयान करना। और पसंदीदा के मुकाबले में ना पसंदीदा को बयान करना।

अच्छाई करो और बुराई से बचो।

खुलासा यह है कि बुद्धिमान शख़्स वह है जो अपने आप से नसीहत हासिल करे। दूसरों से सबक ले। और जो सुने और देखे उसमें अपनी बुद्धि को इस्तेमाल करे तो जो देखे और सुने अगर वह अच्छा है तो उसे करे और अगर बुरा है तो उससे बचे। क्योंकि सारी भलाई इसी में है कि वह भलाई और बुराई की जगहों को अच्छी तरह पहचाने। अच्छाई को करने और बुराई से बचने के तरीकों को जाने। और किसी भी चीज को उसी समय करे जबकि वह जान ले कि वह उसे क्यों कर रहा है और वह कैसी है।

इमान के बाद सबसे महान दौलत हिकमत है जिससे इंसान अपने सभी कामों को तोलता है। जिससे उन्हें उनकी मुनासिब जगहों में रखता है। और जिससे अपनी हर बात सहीह़ तौर पर कहता है और अपना हर काम ठीक तरह से करता है।

बल्कि काम करो और भरोसा करके बैठ मत जाओ।

عَنْ عَلِيٍّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - قَالَ كُنَّا جُلُوسًا عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَبِيَدِهِ عُودٌ، فَنَكَتَ فِي الْأَرْضِ، ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ فَقَالَ:
"مَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا وَقَدْ كُتِبَ مَقْعَدُهُ مِنَ الْجَنَّةِ وَمَقْعَدُهُ مِنَ النَّارِ".
قِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، أَفَلَا نَتَّكِلُ؟
قَالَ: "لَا، اعْمَلُوا وَلَا تَتَّكِلُوا فَكُلٌّ مُيَسَّرٌ لِمَا خُلِقَ لَهُ، ثُمَّ قَرَأَ: ﴿ فَأَمَّا مَنْ أَعْطَى وَاتَّقَى وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَى فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْيُسْرَى وَأَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنَى وَكَذَّبَ بِالْحُسْنَى فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْعُسْرَى

बल्कि काम करो और भरोसा करके बैठ मत जाओ।

तर्जुमा: हज़रत अली बिन तालिब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हम अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास बैठे हुए थे और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ में ऊद की एक लकड़ी थी। आप ने जमीन की तरफ सर झुका या फिर कुछ देर बाद सर उठा कर फरमाया: "तुम में से हर किसी का जन्नत या जहन्नुम में ठिकाना लिख दिया गया है।"

तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा गया: "ऐ अल्लाह के रसूल! तो क्या हम उसी लिखे हुए पर भरोसा ना कर लें।" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "नहीं। बल्कि काम करो और भरोसा करके बैठ मत जाओ। क्योंकि हिर व्यक्ति को उसकी आसानी दी गई है जिसके लिए वह पैदा किया गया है।" फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम निम्नलिखित आयत पढ़ी:

فَأَمَّا مَنْ أَعْطَى وَاتَّقَى وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَى فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْيُسْرَى وَأَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنَى وَكَذَّبَ بِالْحُسْنَى فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْعُسْرَى

(सूरह: अल-लैल, आयत संख्या: 5-10)
(तर्जुमा: तो वह जिसने दिया और परहेज गारी की और सबसे अच्छी को सच माना तो बहुत जल्द हम उसे आसानी देंगे और वह जिसने कंजूसी की और बेपरवाह हुआ और सबसे अच्छी को झूठलाया तो बहुत जल्द हम उसे दुश्वारी देंगे।)

बल्कि काम करो और भरोसा करके बैठ मत जाओ।

क़जा और तक़दीर (भाग्य) पर ईमान अल्लाह पर ईमान के स्तंभों में से एक है। तो जो क़ज़ा और तक़दीर यानी भाग्य पर ईमान न रखे वह अल्लाह कि वह्दानियित (एकता) पर ईमान नहीं रख सकता है और न ही उसकी संपूरण विशिषताओं पर ईमान ला ला सकता है। क्योंकि क़ज़ा और तक़दीर उन अनदेखी चीजों में से है जिन्हें सिर्फ अल्लाह ही जानता है। उसके अलावा कोई नहीं जानता।

क़ज़ा का मतलब है जो भी अल्लाह ने पैदा किया है उसमें इंसाफ से उसका आदेश चलना।

और तक़दीर(भाग्य) का मतलब है कि जो भी हो चुका है और हो रहा है और होने वाला है उन सब चीजों का ज्ञान अल्लाह को है। तो अल्लाह ने अपने ज्ञान के मुताबिक हर चीज को उसके हिसाब से रखा है। उसके फैसले को कोई रद्द करने वाला नहीं है और ना ही उसके आदेश को कोई टालने वाला है। और जो उसने तय किया है उसे कोई नहीं जानता है। किसी को भी क़ज़ा और तक़दीर के मामले में बहस नहीं करना चाहिए। क्योंकि इनमें बहस करना हालाकात का कारण है। तथा उनकी हकीकत को इंसानी बुद्धि नहीं जान सकती है।

बेशक अल्लाह तमाम मखलूक को पैदा करने से पहले ही उनके मामलों को तय कर चुका है। तो जो उसने उनके लिए तय किया है वह होकर रहेगा। क़लम उठा लिए गए हैं और पेज सूख गए हैं।

बल्कि काम करो और भरोसा करके बैठ मत जाओ।

"काम करो और। हर व्यक्ति को उसकी आसानी दी गई है जिसके लिए वह पैदा किया गया है।" यानी अल्लाह के इरादे से उसे जन्नत या जहन्नुम में जाने के लिए आसानी दी गई है जिसके लिए वह पैदा किया गया है औ जो उसके भाग्य में है।

बंदे के ऊपर सिर्फ कोशिश करना है। लक्ष्यों को पा लेना नहीं। क्योंकि ऐ मेरे प्यारे मुसलमान भाई! तुम्हें यह अच्छी तरह मालूम होना चाहिए कि सारे साधन अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के क़ब्ज़े में हैं। तो जो चाहे वह अल्लाह से दुआ करे कि अल्लाह उसे उनके के प्राप्त करने की तोफिक दे। क्योंकि जो अल्लाह से सच्चे दिल से दुआ करता है अल्लाह उसकी दुआ कुबूल फरमाता है। और जो अल्लाह से मांगता है तो अल्लाह उसे देता है।

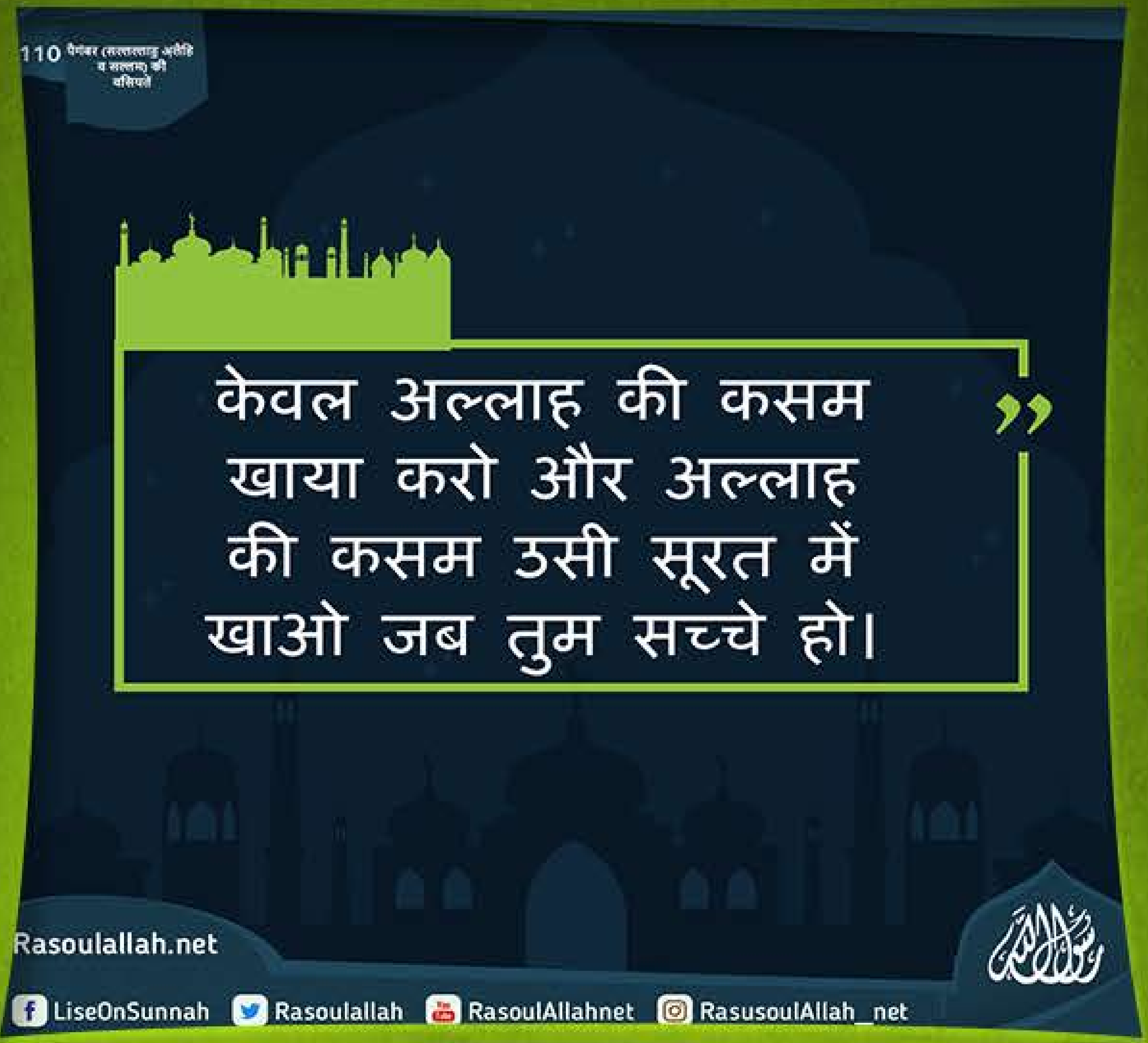

केवल अल्लाह की कसम खाया करो और अल्लाह की कसम उसी सूरत में खाओ जब तुम सच्चे हो।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - أَنَّ رَسُولُ اللَّه صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "لَا تَحْلِفُوا بِآبَائِكُمْ وَلَا بِأُمَّهَاتِكُمْ وَلَا بِالْأَنْدَادِ وَلَا تَحْلِفُوا إِلَّا بِاللَّهِ وَلَا تَحْلِفُوا بِاللَّهِ إِلَّا وَأَنْتُمْ صَادِقُونَ

तर्जुमा: ह़ज़रत अबू हुरैरा रद़ियल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: अपने पिताओं या मांओं की कसमें ना खाया करो और ना बुतों की। केवल अल्लाह की कसम खाया करो और अल्लाह की कसम उसी सूरत में खाओ जब तुम सच्चे हो।"

केवल अल्लाह की कसम खाया करो और अल्लाह की कसम उसी सूरत में खाओ जब तुम सच्चे हो।

इस्लाम से पहले जाहिली जमाने में अरब के लोग अपने बापों, मांओं और बुतों की बहुत ज़्यादा कसमें खाया करते थे। तो नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम ने उन्हें इससे मना किया। क्योंकि इसमें अल्लाह के अलावा को सम्मान देना है। और यह (यानी अल्लाह के अलावा किसी और को सम्मान देना) किसी भी ऐसे व्यक्ति को शोभा नहीं देता जो अल्लाह पर ईमान रखता हो, केवल उसी की इबादत करता हो और अपने दिल में उसकी महानता रखता हो। क्योंकि जिसने अल्लाह को उसके बेहतरीन नामों और बुलंद विशेषताओं के साथ पहचान लिया तो वह उससे अपने मां-बाप बल्कि खुद बल्कि खुद अपनी जान से ज़्यादा मोहब्बत करेगा और उसे सारी कायनात में केवल उसी अल्लाह ही नजर आएगा तो अगर उसे कसम खाने की जरूरत होगी तो वह केवल अल्लाह की ही कसम खाएगा।

जो व्यक्ति अल्लाह के अलावा किसी चीज की कसम खाए और यह आस्था रखे कि उस चीज का भी अल्लाह ही जैसा सम्मान है तो यकीनन उस चीज की कसम हराम है और कसम खाने वाला व्यक्ति अपनी उस आस्था की वजह से काफिर हो जाएगा।

केवल अल्लाह की कसम खाया करो और अल्लाह की कसम उसी सूरत में खाओ जब तुम सच्चे हो।

और जो अल्लाह के अलावा किसी चीज की कसम खाए लेकिन यह आस्था न रखे तो उसकी कसम मकरुह(नापसंदीदा) है लेकिन अगर दिल के इरादे के बगैर ही मुंह से ऐसी कसम निकल गई तो कसम बेकार है और उसका कोई माना नहीं है।

तो जब मुसलमान सिर्फ अल्लाह ही की बढ़ाई करता है तो वह -जरूरत के समय- सिर्फ अल्लाह ही की कसम खाए और उसकी बारगाह के अदब और उसकी महानता का ख्याल रखे। क्योंकि सिर्फ अल्लाह ही उस व्यक्ति को उस पर लगाए गए आरोप या इल्जाम से बरी कर सकता है। तो भला वह क्यों अल्लाह के अलावा किसी की कसम खाए जब के अल्लाह ही के कब्जे में सारा मामला है।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान "और अल्लाह की कसम उसी सूरत में खाओ जब तुम सच्चे हो।" का मतलब यह है कि ज़्यादा कसम मत खाओ और सिर्फ सच्ची ही कसम खाओ। इसकी वजह यह है कि कुछ लोग बहुत ज़्यादा कसम खाते हैं। और अहम और बिना हम सभी मामलों में अक्सर कसम खाया करते हैं। और इसकी परवाह नहीं करते हैं कि अल्लाह ने अपने क़ुरआन की निम्नलिखित आयत में इससे मना किया है। अतः अल्लाह क़ुरआन में इरशाद फ़रमाता है:

केवल अल्लाह की कसम खाया करो और अल्लाह की कसम उसी सूरत में खाओ जब तुम सच्चे हो।

وَ تَجْعَلُوا اللّٰه عُرْضَةً يْمَانِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْا وَتَتَّقُوْا وَتُصْلِحُوْا بَيْنَ
النَّاسِ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ

(सूरह:अल-बक़रह, आयत संख्या:224)

(तर्जुमा: और अल्लाह को अपनी कसमों का निशाना ना बना लो कि एहसान और परहेज़गारी और लोगों में समझौता करने की कसम कर लो। और अल्लाह सुनता जानता है।)

क्योंकि बहुत ज़्यादा कसमें खाने से इंसान ज़्यादातर अपना वकार खो बैठता है। और फिर वह ऐसे अहम मामलों में भी लापरवाही बरतने लगता है जिनमें बल्किुल लापरवाही नहीं बरतना चाहिए जैसे की गवाही देने, वादा पूरा करने वगैरह मामलों में।

और मुसलमान की शान तो यह है कि वह अपनी हर बात, हर काम और अपने हर हाल में अपने अल्लाह के साथ, दूसरों के साथ बल्कि अपने भी साथ हमेशा सच्चा रहता है।

तुम्हारे पास जब कोई ऐसा व्यक्ति (विवाह का संदेश लेकर) आए जिसकी धार्मिकता और अखलाक से तुम संतुष्ट हो तो उससे विवाह कर दो।

عَنْ أَبِي حَاتِمٍ الْمُزَنِيِّ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "إِذَا جَاءَكُمْ مَنْ تَرْضَوْنَ دِينَهُ وَخُلُقَهُ، فَأَنْكِحُوهُ، إِلَّا تَفْعَلُوا تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْأَرْضِ وَفَسَادٌ

قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَإِنْ كَانَ فِيهِ؟

قَالَ: "إِذَا جَاءَكُمْ مَنْ تَرْضَوْنَ دِينَهُ وَخُلُقَهُ فَأَنْكِحُوهُ" ثَلَاثَ مَرَّاتٍ

तर्जुमा: "ह़ज़रत अबू ह़ातिम अल-मुज़नी रद़ियल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "तुम्हारे पास जब कोई ऐसा व्यक्ति (विवाह का संदेश लेकर) आए जिसकी धार्मिकता और अखलाक से तुम संतुष्ट हो तो उससे विवाह कर दो।

तुम्हारे पास जब कोई ऐसा व्यक्ति (विवाह का संदेश लेकर) आए जिसकी धार्मिकता और अखलाक से तुम संतुष्ट हो तो उससे विवाह कर दो।

अगर ऐसा नहीं करोगे तो जमीन में फतिना और फसाद होगा।" लोगों ने पूछा: "ए अल्लाह के रसूल! अगर उसमें कुछ हो तो?" तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने तीन बार यही कहा: " जब तुम तुम्हारे पास कोई ऐसा व्यक्ति (विवाह का संदेश लेकर) आए जिसकी धार्मिकता और अखलाक से तुम संतुष्ट हो तो उससे विवाह कर दो।" मर्द को चाहिए कि वह शादी के लिए धार्मिक और अच्छे अखलाक वाली महिला को इख्तियार करे। अच्छी नस्ल वाली, धनी और सुंदर महिला को चुनने में कोई हर्ज नहीं है लेकिन इस मामले में असल चीज़ धार्मिकता (दीनदारी) ही होना चाहिए क्योंकि वही असल है और बाकी चीजें तो उसके बाद में हैं।

इसी तरह महिला को भी चाहिए को वह दीनदार और अच्छे अखलाक वाले मर्द को अपना जीवनसाथी चुने। क्योंकि वह अगर उससे मोहब्बत करेगा तो वफा करेगा और उसे सम्मान देगा और अगर नापसंद करेगा तो उस पर ज़ुल्म और सितम ना करेगा।

महिला के जिम्मेदार को भी चाहिए कि उसकी शादी ऐसे व्यक्ति से करे जिसके अंदर मर्दानगी की विशेषताएं पाई जाती हों और वास्तव में वह उसके लायक हो जैसे हम आगे इसको बयान करेंगे।

तुम्हारे पास जब कोई ऐसा व्यक्ति (विवाह का संदेश लेकर) आए जिसकी धार्मिकता और अखलाक से तुम संतुष्ट हो तो उससे विवाह कर दो।

हम जानते हैं कि मर्द महिला पर हाकिम रहता है और उसका जिम्मेदार होता है। तो अगर पति धार्मिक और अच्छे अखलाक व चरित्र वाला ही ना हो तो भला वह कैसे अपनी पत्नी के अधिकारों का ख्याल रखेगा और कैसे वह उसकी इज़्ज़त और आबरू की हिफ़ाज़त करेगा।

बेशक गुनाहगार पति अपनी नेक पत्नी के लिए आफत है भले ही उसके अंदर कितनी ही ऐसी विशेषताएं हों जिनकी वजह से उसे दूसरे पुरुषों पर बरतरी हासिल हो। तो अगर माल की वजह से उस गुनाहगार व्यक्ति को दूसरों पर बरतरी हासिल है तो जान लें कि माल तो आता जाता रहता है और यही माल कभी-कभी उसे अपनी पत्नी, अपने परिवार वालों, अपने दोस्तों, पड़ोसियों और रिश्तेदारों के सामने खुल्लम-खुल्ला बुराइयाँ करने पर ललचाता है जिसकी वजह से वह सब के लिए तमाशा बनकर रह जाता है और मुसीबत का कारण होता है। और अगर यह गुनाहगार व्यक्ति अच्छी नस्ल वाला हो लेकिन अदब और एहतराम ना हो तो उसका वंश यानी नसब किसी काम का नहीं है।

उलमा ए किराम ने विवाह के लिए कुफ़ू (बराबरी या योग्यता) की शर्त लगाई है। यानी पुरुष धर्म और अखलाक व चरित्र में महिला के काबिल होना चाहिए। इन दो चीजों के ज़रूरी होने में किसी को इख्तिलाफ नहीं है। इनके अलावा में है।

तुम्हारे पास जब कोई ऐसा व्यक्ति (विवाह का संदेश लेकर) आए जिसकी धार्मिकता और अखलाक से तुम संतुष्ट हो तो उससे विवाह कर दो।

लिहाज़ा अगर कोई पुरुष धार्मिक है और अच्छे अखलाक व चरित्र वाला है तो महिला ऐसे व्यक्ति से विवाह कर सकती है भले ही वह नसल, माल और दौलत में महिला से कम हो। लेकिन अगर धार्मिक और अच्छे अखलाक वाला ना हो तो लड़की के जिम्मेदार (सरपरस्त) को यह अधिकार है कि वह उनके विवाह पर एतराज कर सकता है और उस विवाह को तोड़ने की मांग कर सकता है जबकि उसकी मर्जी के बिना यह विवाह हुआ हो। ह़ज़रत इमाम मालिक के मानने वालों ने अपने इस नजरिए पर क़ुरआन और सुन्नत से दलीलें बयान की हैं।

तथा ऊपर बयान की हुई चीजों के अलावा हमें इस वसीयत से यह भी सबक मिलता है कि विवाह के सहीह़ होने के लिए नसब शर्त नहीं है और ना ही उसका कोई ऐतबार है जब तक कि पति ऐसे परिवार से ना हो जो की पत्नी के लिए शर्मिंदगी या उसकी बेइज़्जती का कारण बने।

तुम्हारे पास जब कोई ऐसा व्यक्ति (विवाह का संदेश लेकर) आए जिसकी धार्मिकता और अखलाक से तुम संतुष्ट हो तो उससे विवाह कर दो।

इस वसीयत से हमें यह भी सबक मलिता है कि मिर्द की धार्मकि उसकी गरीबी, ज़्यादा उम्र होने, कम सुंदरता और नौकरी वगैरह सब चीज़ पर गालबि है।

इस वसयित का खुलासा यह है कि हमें अल्लाह के साथ सभी मामलों में वनिम्रता (सादगी आदि) से काम लेना चाहिए और लोगों के साथ उस समय तक वनिम्रता से रहना चाहिए जब तक कि उसमें किसी तरह का नुकसान ना हो।

अपनी खेती में जैसे मर्जी करे आओ।

عَنْ بَهْزُ بْنُ حَكِيمٍ حَدَّثَنِي أَبِيهِ عَنْ جَدِّي قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، نِسَاؤُنَا مَا نَأْتِي مِنْهُنَّ وَمَا نَذَرُ؟

قَالَ: "ائْتِ حَرْثَكَ أَنَّى شِئْتَ، وَأَطْعِمْهَا إِذَا طَعِمْتَ، وَاكْسُهَا إِذَا اكْتَسَيْتَ، وَلَا تُقَبِّحْ الْوَجْهَ، وَلَا تَضْرِبْ

तर्जुमा: बह्ज़ बिन ह़कीम अपने पिता से, वह उनके दादा से उल्लेख करते हैं कि वह कहते हैं कि मैंने अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा: "ए अल्लाह के रसूल! हम अपनी पत्नियों के पास किस तरफ आएं और कौन सी तरफ छोड़ें?" आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जवाब दिया:

अपनी खेती में जैसे मर्जी करे आओ।

"अपनी खेती में जैसे मर्जी करे आओ। और जब तुम खाओ तो उसे भी खलिाओ और जब तुम पहनो तो उसे भी पहनाओ। उसके चेहरे को बुरा मत कहो और ना मारो।" नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम ने पत्नी को खेती कहा। क्योंकि वह क्योंकि वे खेती के लिए तैयार जमीन की तरह है जिसमें उसका पति बीज डालता है।

उसे खेती कहने से इस बात का पता चलता है कि अगर संभोग (पत्नी के साथ सेक्स) आगे के स्थान में हो तो किसी भी समय और किसी भी तरीके से कर सकता है। और यह भी पता चलता है कि संभोग सिर्फ आगे ही के स्थान में करना चाहिए। पीछे के स्थान में संभोग नहीं करना चाहिए। क्योंकि पीछे का स्थान बीज बोने की जगह नहीं है। क्योंकि सिर्फ आगे ही का स्थान यानी बच्चा पैदा होने की जगह ही बीज बोने की कुदरती जगह है।

इस वसयित में नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि अलेही के कहने "और जब तुम खाओ तो उसे भी खलिाओ और जब तुम पहनो तो उसे भी पहनाओ।" से इस बात की तरफ इशारा है की पत्नी से आनंद लेने, पत्नी के उसकी सेवा करने, उसकी औलाद की माँ होने, उसके घर का ख्याल रखने और रात और दिन में उसके लिए तसल्ली का सामान होने के बदले में पति को उस पत्नी का खर्च जरूरी है। और यह खर्च उस जैसा होगा जैसा वह अपने ऊपर खर्च करता है।

अपनी खेती में जैसे मर्जी करे आओ।

तो जब वह खाना खाए तो उसे भी खाने में अपने साथ शरीक करे। और उसमें बिना पत्नी की मर्ज़ी के अपने आप को उस पर बरतरी ना दे। और जब अल्लाह उसे अपने लिए कपड़े बनाने की तौफीक दे तो अपनी पत्नी के लिए भी उसके मुनासबि कपड़े बनाए।

यही इंसाफ और न्याय है जसिका प्यार और मोहब्बत पर आधारति ववािहति जीवन तकाजा करता है।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम के फरमाने "उसके चेहरे को बुरा मत कहो और ना मारो।" का मतलब है कि "अल्लाह तुम्हें बदसूरत बना दे।" जैसे शब्द ना कहो और ना ही उसके चेहरे पर मारो। और न ही उसे हकिारत के नगािह से देखो। क्योंकि अल्लाह ने ह़ज़रत ए आदम अ़लैहस्सिलाम को उसी चेहरे की सूरत में पैदा कयिा है अगरचे महलिा और पुरुष के चेहरे में थोड़ा फर्क रहता है।

ए मेरे प्यारे मुसलमान भाई! अच्छी तरह जान लो कि ववािहति जंदिगी दस नम्निलखिति सद्धिांतों व नयिमों पर आधारति है:

न्याय, सखावत (उदारता), माफी, भलाई, परहेज़गारी (धर्मनष्ठिता), सहयोग, सच्चाई, भरोसा, ईमानदारी, और एक दूसरे को समझना।

महिलाओं के साथ अच्छा व्यवहार करो।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ – رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ – عَنْ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ:
"مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ، فَلَا يُؤْذِي جَارَهُ، وَاسْتَوْصُوا بِالنِّسَاءِ خَيْرًا؛
فَإِنَّهُنَّ خُلِقْنَ مِنْ ضِلَعٍ وَإِنَّ أَعْوَجَ شَيْءٍ فِي الضِّلَعِ أَعْلَاهُ، فَإِنْ ذَهَبْتَ تُقِيمُهُ
كَسَرْتَهُ، وَإِنْ تَرَكْتَهُ لَمْ يَزَلْ أَعْوَجَ، فَاسْتَوْصُوا بِالنِّسَاءِ خَيْرًا

तर्जुमा: ह़ज़रत अबू हुरैरा रद़ियल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:"जो कोई अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता हो तो वह अपने पड़ोसी को तकलीफ न पहुंचाए। और महिलाओं के साथ अच्छा व्यवहार करो। इसलिए के वे पसली से पैदा की गई हैं।

महिलाओं के साथ अच्छा व्यवहार करो।

और पसलियों में सबसे ऊंची वाली पसली सबसे ज़्यादा टेढ़ी है। तो अगर तुम उसे सीधा करना चाहोगे तो तोड़ दोगे और अगर यूंही छोड़ दोगे तो वह टेढ़ी ही रहेगी। तो महिलाओं के साथ अच्छा व्यवहार करो।"

यह उन महान वसियतो में से एक है जो पुरुषों और महिलाओं को अमन व शांति, प्यार व मोहब्बत, इत्तेफाक और आपस में समझ बूझ के साथ जिंदगी गुजारने की ज़मानत देती है। और हर एक को उसके अधिकारों और जिम्मेदारियों की याद दिलाती है।

इस ह़दीस़ शरीफ में नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने पड़ोसियों को तकलीफ देने से मना करने के बाद महिलाओं के साथ अच्छा व्यवहार करने का आदेश दिया है। क्योंकि महिला जबकि पत्नी हो एक ऐसी पड़ोसन है जो अपने पड़ोसी यानी पति के साथ एक ऐसे मजबूत बंधन में जुड़ी रहती है जिसकी इजाज़त अल्लाह ने दी है जिसकी वजह से अल्लाह ने उन दोनों को एक जगह जमा किया है ताकि वह एक दूसरे के लिए लिबास और सुकून हो जाएं।

क़ुरआन और सुन्नत में पड़ोसियों के अधिकार पर बहुत ज़्यादा जोर दिया गया है खासतौर पर जबकि पड़ोसी नजदीकी मुसलमान हो।

महिलाओं के साथ अच्छा व्यवहार करो।

तो पत्नी जो कि सबसे नजदीक मुसलमान पड़ोसन है जो पति के हमेशा नजदीक रहती है, उसके घर में जिंदगी बसर करती है, और दोनों एक दूसरे से हर तरह का सुकून हासिल करते हैं तो अंदाजा लगाएं कि इस पड़ोसन (यानी पत्नी) के पति पर कितने अधिकार होंगे! और उस पर उस पड़ोसी (यानी पति) के कितने अधिकार होंगे!

इसी वजह से नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम ने पुरुषों को महिलाओं के साथ अच्छा व्यवहार करने का आदेश दिया है। ताकि वे एक दूसरे से संबंध बेशुमार अधिकारों का खयाल रख सकें।

"उनके साथ अच्छा व्यवहार करो।" इसका मतलब यह है कि तुम एक दूसरे को आदेश दो कि हिर एक अपनी पत्नी के खर्च, उसके कपड़ों और दूसरी जरूरतों का खयाल रखे। और उसके साथ अच्छा बर्ताव करे।

यह वसयित पुरुषों को तमाम मामलों में अच्छी तरह से न्याय और इंसाफ स्थापित करने की दावत देती है। इस्लाम में इंसाफ का संतुलन यह है कि इंसान को उतने अधिकार भी दिए जाएं जितनी उसके ऊपर जिम्मेदारियाँ हैं।

कोई मोमिन पुरुष किसी मोमिना महिला से नफरत ना करे।

عَـنْ أَبِي هُرَيْـرَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْـهُ - أَنَّ رَسُـولُ اللَّه صَـلَّى اللَّهُ عَلَيْـهِ وَسَـلَّمَ قَـالَ: لَا يَفْرَكْ مُؤْمِنٌ مُؤْمِنَةً. إِنْ كَرِهَ مِنْهَا خُلُقًا رَضِيَ مِنْهَا آخَرَ

तर्जुमा: हज़रत अबू हुरैरा रद़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "कोई मोमिन पुरुष किसी मोमिना महिला से नफरत ना करे। कि अगर उसमें एक आदत ऐसी होगी जो उसे नापसंद होगी तो दूसरी ऐसी भी होगी जो उसे पसंद होगी।"

कोई मोमिन पुरुष किसी मोमिना महिला से नफरत ना करे।

हम सभी को मालूम है कि अगर इंसान को कोई चीज दी जाती है तो उसे किसी दूसरी चीज से मेहरूम रखा जाता है। जब उसे किसी तरस से बुलंदी की जाती है तो किसी दूसरी तरफ से उसे नीचा भी कर दिया जाता है। और जब उसकी किसी आदत या किसी काम की वजह से उसकी तारीफ होती है तो लाजमी तौर पर उसकी किसी आदत या किसी काम की वजह से बुराई भी होती है। क्योंकि पैगंबरो के अलावा कोई इंसान किसी चीज में संपूरणता का दावा नहीं कर सकता। क्योंकि सिर्फ उन्हें ही मानव कमाल प्राप्त है। उनके अंदर कोई बुरी आदत नहीं होती और ना ही वह ऐसा कोई काम करते हैं जिसकी वजह से उनकी बुराई हो। इसके बावजूद बहुत से पैगंबर ऐसे भी गुजरे हैं जिन्होंने बहुत तंगी में जीवन बसर किया कि उनके पास बदन छुपाने के लिए कपड़े और जीने भर खाने के अलावा कुछ ना था।

इसकी रोशनी में हम इस ह़दीस़ और इसके महान लक्ष्यों को समझ सकते हैं। तो अगर कोई पुरुष अपनी पसंदीदा लड़की से शादी करता है जो उसे बहुत सुंदर और अच्छे आदत वाली लगती हो तो जरूरी नहीं है कि उसकी सभी आदतें उसके चाहने के मुताबिक हों बल्कि हो सकता है कि उसके अंदर कुछ आदतें ऐसी हों जो उसे पसंद आती हों और कुछ ऐसी भी हों जिन्हें वह पसंद ना करता हो। और यह एक आम बात है।

कोई मोमिन पुरुष किसी मोमिना महिला से नफरत ना करे।

तो ऐसी सूरत में उस व्यक्ति को उस महिला से नाराज नहीं होना चाहिए कि जिसकी वजह से उसे छोड़ दे या तलाक दे दे। बल्कि उसे उसकी खूबियों और खामियों को अच्छी तरह देखना चाहिए। अगर उसकी खूबियाँ उसकी खामियों से ज़्यादा हों तो वह क्या ही अच्छी पत्नी है! उदाहरण के लिए अगर पति को अपनी पत्नी में किसी तरह की कोई शरीरिक या नैतिक कमी नजर आए तो उससे नफरत ना करे क्योंकि अगर उनमें कुछ कमी है जो उसे पसंद नहीं है तो कुछ अच्छाई भी होगी जो उसे बहुत पसंद होगी।

तथा देखें कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम ने इस वसियत के अंदर भौतिक पहलूओं से ज़्यादा नैतिक ही पहलूओं को अहमियत दी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "अगर उसमें एक आदत ऐसी होगी जो उसे नापसंद होगी तो दूसरी ऐसी भी होगी जो उसे पसंद होगी।" इसकी वजह है कि पुरुष और महिला के अंदर नैतिक पहलू भौतिक पहलू से कई गुना ज़्यादा महत्वपूरण है। तो बुद्धिमान व्यक्ति पहले धार्मिक और नैतिक पहलूओं को देखता है उसके बाद भौतिक और शरीरिक पहलूओं पर नजर करता है।

कोई मोमिन पुरुष किसी मोमिना महिला से नफरत ना करे।

तो जिसे धार्मिक महिला मिल गई गोया कि उसे उसकी चाहत मिल गई। उसके लिए यह काफी है कि जब वह उसे देखे तो खुश कर दे। जब कुछ आदेश दे तो उसकी आज्ञा का पालन करे। और जब वह उससे दूर हो तो उसके माल और उसकी इज़्ज़त और आबरू की सुरक्षा करे।

इस ह़दीस़ पाक में मोमिन को संबोधित किया गया है क्योंकि वही नसीहत से फायदा उठाता है। उसी पर नसीहत असर करती है। और वही अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम के आदेश पर अमल करता है जो दोनों संसार में उसकी कामयाबी का कारण होता है। इसी वजह से नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह नहीं कहा कि कोई पुरुष किसी महिला से नफरत ना करे बल्कि यह कहा कि कोई मोमिन पुरुष किसी मोमिना महिला से नफरत ना करे।

तुममें से कोई व्यक्ति अपनी पत्नी को गुलामों की तरह कोड़ों से न मारे

عَـنْ عَبْـدِ اللَّـهِ بْـنِ زَمْعَـةَ - رَضِيَ اللَّـهُ عَنْـهُ - عَـنْ النَّبِـيِّ صَـلَّى اللَّـهُ عَلَيْـهِ وَسَـلَّمَ قَالَ:

لَا يَجْلِدُ أَحَدُكُمْ امْرَأَتَهُ جَلْدَ الْعَبْدِ ثُمَّ يُجَامِعُهَا فِي آخِرِ الْيَوْمِ"

तर्जुमा: ह़ज़रत अ़ब्दुल्लह बनि ज़ुम्अ़ह रद़यिल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं कि है कि निबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "तुममें से कोई व्यक्ति अपनी पत्नी को गुलामों की तरह कोड़ों से न मारे कि फिरि रात को उससे संभोग करेगा।"

तुममें से कोई व्यक्ति अपनी पत्नी को गुलामों की तरह कोड़ों से न मारे

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम के फरमान "तुम में से कोई व्यक्ति अपनी पत्नी को गुलामों की तरह कोड़े से ना मारे।" का मतलब है कि बहुत ज़्यादा ना मारे जैसा कि अपने गुलाम को मारता है। इमाम मुस्लिम की रिवायत में है: "अपनी दासी की तरह ना मारे।"

अरब के लोग अक्सर अपने गुलामों और दासियों को बहुत ज़्यादा मारते थे या तो इसलिए कि वे उनका सम्मान नहीं करते थे या इसलिए कि वे सही तौर पर काम नहीं करते थे।

ह़दीस़ पाक में कोड़े से मारने से मुराद बहुत ज़्यादा मारना-पीटना है चाहे वह किसी भी चीज के जरिए हो जिससे मारा जाता हो।

ह़दीस़ पाक में पूरे तौर पर मानने से मना नहीं किया गया है बल्कि मारने का तो इसमें सुबूत है। हाँ अलबत्ता बहुत ज़्यादा मारने से मना किया गया है। इसलिए की पत्नी कुछ वजहों से दासी की तरह है। वह अपने पति पर निर्भर है। और उसके इतने ही अधिकार हैं जितनी उसके ऊपर जिम्मेदारियाँ हैं। लेकिन पुरुष को उस पर बरतरी हासिल है इस माना कर कि उसके धार्मिक और सांसारिक मामलों में पुरुष उसका जिम्मेदार है।

तुममें से कोई व्यक्ति अपनी पत्नी को गुलामों की तरह कोड़ों से न मारे

इसी वजह से अल्लाह ने महिला पर पुरुष की आज्ञा का पालन करने को जरूरी करार दिया है बशर्ते कि वह गुनाह का आदेश ना दे। तथा इस वसियत से यह भी लिया जाता है कि आदर्श पति अपनी पत्नी को उस समय तक नहीं मारता है जब तक की बहुत सख्त खिलाफ ना हो जाए और वह मारने पर मजबूर ना हो जाए। तथा याद रखना चाहिए कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम ने कभी भी अपनी किसी पत्नी को नहीं मारा।

और यह भी स्पष्ट होना चाहिए कि आप सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम जब पत्नी को मारने की इजाजत दी तो उसके लिए शर्तें और नियम भी रखे हैं ताकि कोई इस मामले में लापरवाही और ज़्यादती से काम न ले। तो इजाजत इसलिए है कि जिरूरत के समय थोड़ा बहुत मारा भी जा सकता है। और मनादी इस पर उभारने के लिए है कि सवाब की उम्मीद रखते हुए पत्नी के साथ सब्र और बर्दाश्त से काम ले लिया जाए। क्योंकि सब्र और बर्दाश्त से काम लेने में बहुत ही ज़्यादा सवाब है।

जिसे पसंद हो कि उसकी रोज़ी में ज़्यादती हो और उसकी उम्र बढ़ा दी जाए तो वह रिश्तेदारी निभाए।

عَنْ أَنَس بْن مَالك رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّه صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "مَنْ سَرَّهُ أَنْ يُبْسَطَ لَهُ رِزْقُهُ أَوْ يُنْسَأَ لَهُ فِي أَثَرِهِ فَلْيَصِلْ رَحِمَهُ

तर्जुमा: ह़ज़रत अनस बनि मालकि रद़यिल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना: "जसि पसंद हो कि उसकी रोज़ी में ज़्यादती हो और उसकी उम्र बढ़ा दी जाए तो वह रश्तिेदारी नभिाए।"

जिसे पसंद हो कि उसकी रोज़ी में ज़्यादती हो और उसकी उम्र बढ़ा दी जाए तो वह रिश्तेदारी निभाए।

यह दुनयिा और आखरित की तमाम तरह की भलाइयों को शामलि वसयितओं में से एक वसीयत है। रज़्क़ि में ज़्यादती का मतलब है उसमें बरकत होना।

जैसा कि हमें यह मालूम है कि हर इंसान का रज़्क़ि पहले ही से तयशुदा है वैसे ही यकीनी तौर पर यह भी मालूम है कि रज़्क़ि में ज़्यादती का मतलब उसमें बरकत होना है इस तौर पर की रज़्क़ि वाला अपने रज़्क़ि का मजा महसूस करे। साफ तौर पर उसके फायदे देखे। और उसके हासलि होने पर अल्लाह के शुक्र की तोफीक नसीब हो जाए। तो इस तरह से रज़्क़ि में ज़्यादती से उसे दुनयिा में सवाब मलिगा और आखरित में भी उसका अच्छा अंजाम होगा।

मेरी राय के मुताबकि यही रज़्क़ि में ज़्यादती का मतलब है और अल्लाह ही बेहतर जानता है।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम का फरमान: "जसि पसंद हो की......" रशि्तेदारी नभिाने पर उभारने, रज़्क़ि और उम्र में बरकत और आखरित में अल्लाह के सवाब की खुशखबरी देने के लएि है। और आखरित का सवाब ही हक़ीक़ी भलाई है और हमेशा रहने वाला है।

جل جلاله

जिसे पसंद हो कि उसकी रोज़ी में ज़्यादती हो और उसकी उम्र बढ़ा दी जाए तो वह रिश्तेदारी निभाए।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम का फरमान " तो वह रिश्तेदारी निभाए।" एक ऐसा आदेश है जिसमें हर तरह की भलाई और एहसान है। तो जिसने उस तरह से रिश्तेदारी निभाई जैसा कि अल्लाह ने आदेश दिया है तो वह बेहतरीन मोमिनो और उन सम्मान वालों में से है जिन पर पर अल्लाह ने ज्ञान के दरवाजे खोल दिए हैं और जिन्हें उसने हिकमत और अक्लमंदी की दौलत से नवाजा है। वह इसलिए कि रिश्तेदारी निभाने में तजुर्बे, अक्लमंदी, सब्र, बर्दाश्त और मेहनत की जरूरत होती है। क्योंकि रिश्तेदार अक्सर अच्छाई का बदला बुराई से देते हैं। कितना ही उन्हें दे दिया जाए खुश नहीं होते हैं और कितनी ही उनके साथ भलाई कर ली जाए फिर भी जैसा शुक्र करना चाहिए वह नहीं करते हैं। बहुत कम रिश्तेदार ऐसे होते हैं जिन्हें अल्लाह इस तरह की बुरी आदत से महफूज रखता है।

मुसलमान को चाहिए कि वह रिश्तेदारों के साथ भलाई करे और बदले में उनसे उसी जैसी भलाई की उम्मीद ना करे और ना ही उनसे उस पर शुक्र की उम्मीद रखे। और अपने आपको इसका आदि बनाए कि वह उसके साथ भी भलाई करे जो उसके साथ बुरा करे। तो जो ऐसे व्यक्ति के साथ भलाई करे जिसने उसके साथ बुरा किया हो वह अल्लाह के बेहतरीन और उसके नजदीक बंदों में से है।

जिसे पसंद हो कि उसकी रोज़ी में ज़्यादती हो और उसकी उम्र बढ़ा दी जाए तो वह रिश्तेदारी निभाए।

बेशक एक सच्चा मुसलमान अपने आप और दूसरे लोगों के साथ हमेशा जहिाद में रहता है। और यह जहिाद की तरह का होता है और इसके कई कारण होते हैं। तो उसे चाहिए कि वह अल्लाह से दुआ करे कि वह उसे सीधे रास्ते की हिदायत दे और लोगों के साथ भलाई से पेश आने में मुश्किलों का सामना करने में उसकी मदद करे। क्योंकि जो अपने अल्लाह से मदद मांगे तो उसकी मदद करेगा, उसे सीधे रास्ते की हिदायत देगा और मरते दम तक उस पर साबित रहने की ताकत आता करेगा।

एक दूसरे से मुसाफा करो (यानी हाथ मिलाओ)
नफरत दूर होगी।

عَنْ عَطَاءِ بْنِ أَبِي مُسْلِمٍ عَبْدِ اللَّهِ الْخُرَاسَانِيِّ- رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - أَنَّ رَسُولُ اللَّه صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "تَصَافَحُوا يَذْهَبْ الْغِلُّ، وَتَهَادَوْا تَحَابُّوا، وَتَذْهَبْ الشَّحْنَاءُ

तर्जुमा: हज़रत अ़ता बनि अबी मुस्लमि अ़ब्दुल्लह ख़ुरासानी रद़यिल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "एक दूसरे से मुसाफा करो (यानी हाथ मलिाओ) नफरत दूर होगी। और एक दूसरे को उपहार दो आपस में प्यार बढ़ेगा और दुश्मनी दूर होगी।"

एक दूसरे से मुसाफा करो (यानी हाथ मिलाओ) नफरत दूर होगी।

इस्लाम भाईचारे, भलाई, नेकी पर मदद करने और हर बात और हर काम में अल्लाह के लिए ईमानदारी से काम लेने का धर्म है।

और सच्चा मोमनि वह है जसिके दलि में अपने मुसलमान भाई के लिए कसिी तरह का कोई हसद ना हो और ना ही कोई ऐसा काम करे जसिसे इमानी रश्ति में कोई दरार पड़े। बल्कि वह तो हमेशा जहाँ तक हो उससे हो सकता है प्यार व मोहब्बत को बाकी रखने की कोशशि करता है। तो एक मोमनि दूसरे मोमनि के लिए बल्डिगि की तरह है जसि एक दूसरे से ताकत मलिती है। तो अगर शैतान के बहकाने की वजह से एक मुसलमान और उसके भाई मुसलमान के बीच रश्ति में कोई दरार पड़ जाए तो मुसलमान को चाहिए कि खितरा बढ़ने से पहले ही फौरन अपनी गलती का भुगतान भरदे, शैतान से अल्लाह की पनाह मांगे, अपने मुसलमान भाई से माफी मांगे, तौबा व इस्तगिफार करे और पहले से बेहतर होने का पक्का इरादा करे।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के फरमान "एक दूसरे से मुसाफा करो (यानी हाथ मलिाओ) नफरत दूर होगी।"

एक दूसरे से मुसाफा करो (यानी हाथ मिलाओ) नफरत दूर होगी।

में दिलों में मोहब्बत पैदा करने और उनसे हसद और दुश्मनी दूर करने का एक बेहतरीन जरिए की तरफ रहनुमाई की गई है। जब मुसलमान मुसाफा करते समय हाथ में हाथ देते हैं तो गोया कि वह नए सिरे से प्यारों व मोहब्बत और भाईचारे का वादा करते हैं और हाथों का मिलना दिलों के मिलने का कारण होता है। तो जब दो मुसलमान भाई आपस में भलाई के साथ मिलते हैं और उनमें से हर एक खुश दिली से अपनी हथेली दूसरे की हथेली में रखता है तो उन्हें इस बात का यकीन हो जाता है कि उनके दरमियान अब सारी दुश्मनी खत्म हो चुकी है और उनके ऊपर अब सिर्फ यही है कि एक दूसरे की गलती की आपस में शिकायत करें या बगैर शिकायत के एक दूसरे को माफ कर दें।

और मुसलमान को चाहिए कि वह अपने मुसलमान भाई से हाथ मिलाते समय मुस्कान के साथ मिले और उसके लिए दुनिया और आखिरत में भलाई की दुआ करे।

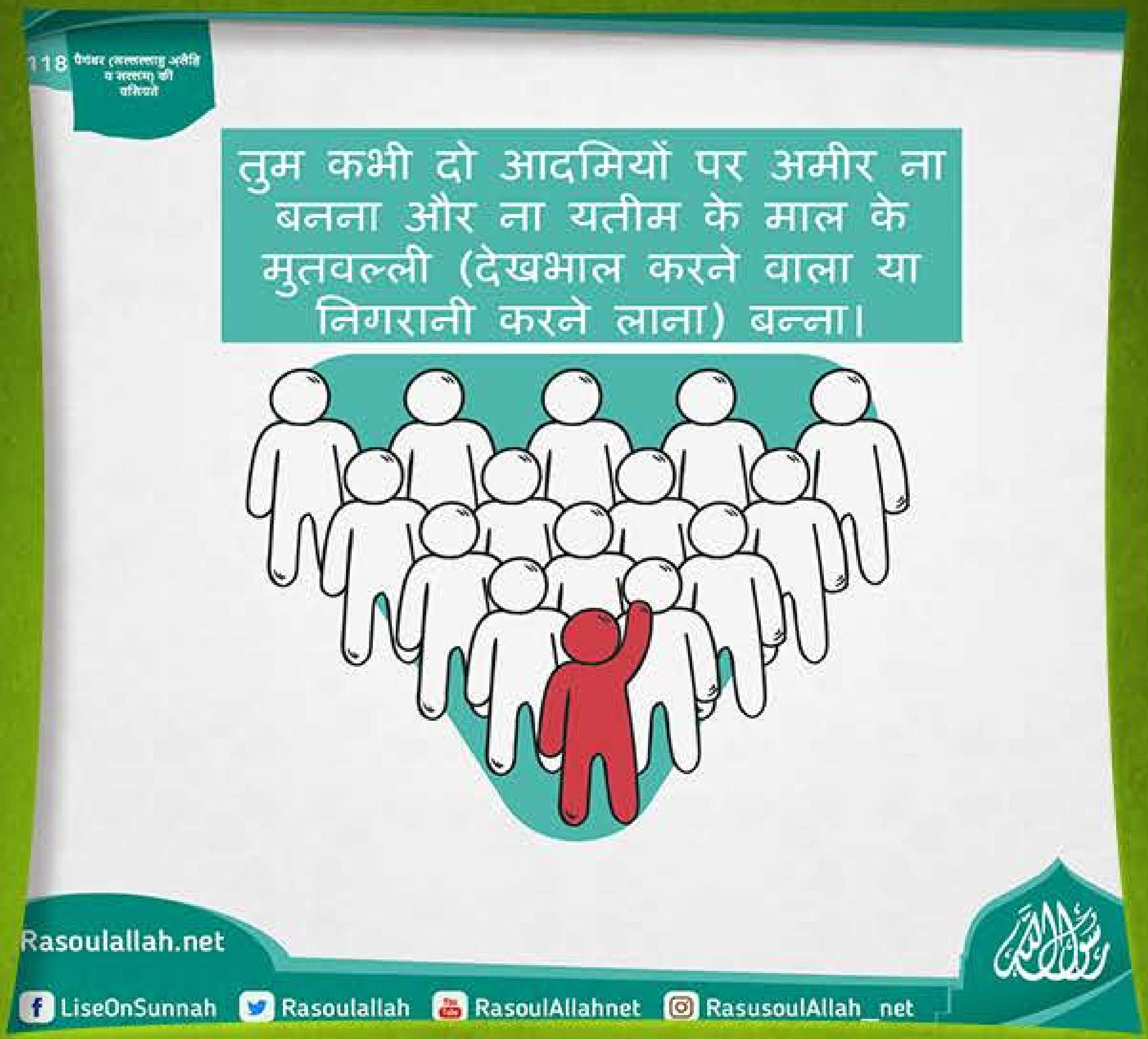

तुम कभी दो आदमियों पर अमीर ना बनना और ना यतीम के माल के मुतवल्ली (देखभाल करने वाला या निगरानी करने लाना) बन्ना।

عَنْ أَبِي ذَرٍّ – رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ – أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ:" يَا أَبَا ذَرٍّ! إِنِّي أَرَاكَ ضَعِيفًا وَإِنِّي أُحِبُّ لَكَ مَا أُحِبُّ لِنَفْسِي، لَا تَأَمَّرَنَّ عَلَى اثْنَيْنِ وَلَا تَوَلَّيَنَّ مَالَ يَتِيمٍ

तर्जुमा: हज़रत अबू ज़र रद़यिल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "ए अबू ज़र! मैं देखता हूँ की तुम बहुत कमजोर हो और तुम्हारे लिए वही चीज पसंद करता हूँ जो अपने लिए पसंद करता हूँ। तुम कभी दो आदमयों पर अमीर ना बनना और ना यतीम के माल के मुतवल्ली (देखभाल करने वाला या नगिरानी करने लाना) बन्ना।"

तुम कभी दो आदमियों पर अमीर ना बनना और ना यतीम के माल के मुतवल्ली (देखभाल करने वाला या निगरानी करने लाना) बन्ना।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम हर व्यक्ति को उसके मुनासबि स्थान में रखते थे। चूंकि हिज़रत अबू हुरैरा रद़यिल्लाहु अन्हु को बहुत से काम थे और उनके कांधे पर बहुत सी जिम्मेदारियाँ थीं इसी वजह से नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम ने उन्हें दो लोगों का अमीर बनने की परेशानी बर्दाश्त करने और इस बात के लिए ना अहल समझा कि वह किसी यतीम के माल की निगिरानी करने वाले बनें हालांकि उनके अलावा जिम्मिेदारियाँ संभालने पर वह अच्छी तरह लायक थे।

इसकी वजह यह है कि अमीर बनना एक ऐसी जिम्मिेदारी है जिसके लिए दूसरी सांसारिक और धार्मिक जिम्मिेदारियों से खाली होना जरूरी है। यह एक बहुत ही बड़ी और भारी जिम्मिेदारी है। इंसान कभी-कभार किसी मामले में ताकतवर होता है तो किसी दूसरे मामले में कमजोर होता है। और कभी किसी एक काम करने की ताकत रखता है जिसे दूसरे नहीं कर सकते तो कभी उसका उल्टा भी होता है कि दूसरे तो किसी काम की ताकत रखते हैं मगर यह उसके करने की ताकत नहीं रखता है।

तुम कभी दो आदमियों पर अमीर ना बनना और ना यतीम के माल के मुतवल्ली (देखभाल करने वाला या निगरानी करने लाना) बन्ना।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम के फरमान "मैं देखता हूँ कि तुम कमजोर हो और मैं तुम्हारे लिए वही चीज पसंद करता हूँ जो अपने लिए पसंद करता हूँ।" का मतलब है कि मैं तुम्हें इमारत और हुक्म रानी के बोझ बर्दाश्त करने से कमजोर देखता हूँ। क्योंकि इस जिम्मेदारी में उन चीजों की जरूरत होती है जो तुम्हारे पास नहीं हैं। तथा तुम इससे बेहतर जिम्मेदारी में व्यस्त हो और जो पहले ही से किसी चीज में व्यस्त हो उसे किसी चीज में व्यस्त करना नहीं चाहिए। अल्लाह तुम्हें उसकी हिदायत दे जो तुम्हारे लिए इससे बेहतर हो। वही इख्तियार करो जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिए इख्तियार किया है। इसी काम में रहो जिसमें अल्लाह ने तुम्हें रखा है। और ऐसी चीज़ की तमन्ना मत करो जिसके नतीजे में तुम्हें बुराई का सामना करना पड़े हालांकि तुम उससे बेनियाज़ हो। तो तुम पर अल्लाह की रहमत उससे ज़्यादा है जिसकी तुम आरज़ू में हो हालांकि इसमें तुम्हारे लिए आफत मुसीबत तो आफत आफत तो आफत है।

तो पता चला कि इमारत और हुक्मरानी के मैदान के अलग लोग हैं जैसे कि इबादत के लिए अलग चुने हुए बंदे और मैदान-ए-जंग के लिए अलग शहसवार होते हैं। तो पाकी है उसके के लिए जिसने हर चीज को उसका हक दिया फिर उसकी रहनुमाई की।

अपने भाई की मदद करो वह ज़ालिम या मज़लूम।

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "انْصُرْ أَخَاكَ ظَالِمًا أَوْ مَظْلُومًا" قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ، هَذَا نَنْصُرُهُ مَظْلُومًا فَكَيْفَ نَنْصُرُهُ ظَالِمًا؟ قَالَ: "تَأْخُذُ فَوْقَ يَدَيْهِ

तर्जुमा: हज़रत अनस रदयिल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "अपने भाई की मदद करो वह ज़ालमि या मज़लूम।" सहाबा ने पूछा: ए अल्लाह के रसूल! हम मजलूम की तो मदद कर सकते हैं लेकनि जालमि की मदद कसि तरह करें? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "(ज़ुल्म से) उसके हाथों को पकड़ लो। (यानी उसे ज़ुल्म से मना करो तो यही उसकी मदद है)।"

अपने भाई की मदद करो वह ज़ालिम या मज़लूम।

इस वसयित में ज़ालमि और मज़लूम के दरमयिान न्याय और इंसाफ के दो नयिम बयान कएि गए हैं:
पहला: ज़ुल्म व अत्याचार को रोकना।

दूसरा: ज़ुल्म व अत्याचार का जवाब देना।

नबी ए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम के फरमान "अपने भाई की मदद करो वो ज़ालमि हो या मज़लूम। "में दूसरे का माना तो जाहरि है लेकनि पहले का माना जाहरि नहीं है इसी वजह से सहाबा ए करिाम रद़यिल्लाहु ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि विसल्लम से पूछा कि ज़ालमि की मदद करने का क्या तरीका है? तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन्हें इस तरह से जवाब दयिा कि जिससे उनका संदेह दूर हो गया। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: "(ज़ुल्म से) उस (ज़ालमि) के हाथों को पकड़ लो।" यानी जनि हाथों के जरएि वह मज़लूम को मार रहा है और उस पर ज़ुल्म कर रहा है उन पर अपने हाथों को रख दो। मतलब यह है कि उसे ज़ुल्म करने से रोक दो। तो इसी में ज़ालमि की मदद है। क्योंकि ज़ालमि को गुस्से में यह नहीं मालूम होता है कि वह क्या कर बैठेगा। तो जो उसे रोकने की ताकत रखता हो उसे चाहएि कि जहाँ तक हो सके उसे ज़ुल्म करने से रोके और इसमें कोताही से काम ले वरना तो वह भी ज़ुल्म करने में ज़ालमि का साथी माना जाएगा।

अपने भाई की मदद करो वह ज़ालिम या मज़लूम।

ऊपर बयान की हुई चीज़ों के अलावा इस वसयित से दो चीजें और ली जाती हैं।

पहली चीज तो यह है कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि विसल्लम का फरमान "अपने भाई की मदद करो वो ज़ालिम हो या मज़लूम।" से यह पता चलता है कि ताकत होने पर यह काम ज़रूरी (अनिवार्य) है। यानी इसमें उन लोगों को संबोधित किया गया है जो मदद करने की ताकत रखते हों ना कि उनको जो उसकी ताकत ना रखते हों। इसका उदाहरण ऐसे ही है जैसे के भलाई का आदेश देना और बुराई से रोकना कि यह भी उसी व्यक्ति पर अनिवार्य यानी जरूरी होता है जो ज़वान या हाथ के जरिए इसकी ताकत रखता हो कि जिसि का बयान पिछली वसयित में गुजर चुका है।

और जो नसीहत के जरिए भी ज़ालिम या मज़लूम की मदद करने की ताकत नहीं रखता हो तो वह अपने दिल ही में उस ज़ुल्म को बुरा समझे और ज़ालिम के लिए हिदायत और रहनुमाई और मज़लूम के लिए मदद की दुआ करे। तो इस तरह से उसकी जिम्मेदारी अदा हो जाएगी। क्योंकि ताकत के मुताबिक ही आज्ञा के पालन करने का आदेश है। क्योंकि गैर मुमकिन चीज का जिम्मेदार बनाना सही नहीं है।

अपने भाई की मदद करो वह ज़ालिम या मज़लूम।

दूसरी चीज यह है कि ज़ालिम और मज़लूम के दरमियान बराबरी से काम ले। यानी उनके दरमियान न्याय और इंसाफ से काम ले। इस तौर पर कि बिना किसी एक तरफ झुके हुए हर एक को उसकी शैतानी ख्वाहिश से बचाए और वह उनके दरमियान एक जज की तरह रहे। ज़ालिम से कहे:" तुम ज़ुल्म कर रहे हो। या फुलाने व्यक्ति पर ज़ुल्म मत करो। क्योंकि वह तुम्हारा बुरा नहीं चाहता है बल्कि तुम्हारा भला चाहता है।" या इस तरह के दूसरे कोमल शब्दों का प्रयोग करे जिनसे उसका गुस्सा खत्म हो जाए और वह अपने होश की तरफ लौट आए। और हिकमत और नसीहत के जरिए ज़ुल्म के अंजाम से उसे डराए।

बेशक ज़ालिम और मज़लूम की मदद करना नेकी और भलाई पर मदद करने में से है। तो हर मुसलमान को चाहिए कि वह हमेशा अपनी ताकत के मुताबिक अपने मुसलमान भाई की मदद करे। क्योंकि अल्लाह उस समय तक उस अपने बंदे की मदद में रहता है जब तक कि वह अपने भाई की मदद में रहता है।